शोध शीर्षकः–'' विधार्थियों में नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच के विकास की स्थितियों का समीक्षात्मक अध्ययन।''

शोधकर्ताः – 1 अमित ढाका व्याख्याता डाइट ,चूरू

2 जयचन्द राबिया राउप्रावि, राउताल राजगढ

प्रस्तावनाः–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज में रहते हुए व्यक्ति को नैतिक गुणों का पालन करते हुए मर्यादित ढंग से जीवन यापन करना अति आवश्यक है जिससे ही व्यक्ति की सोच सकारात्मक होती है, प्राचीन समय से ही शिक्षा के क्षेत्र में गुरूकुलों में विधार्थियों को नैतिकता, दया, ममता, करूणा, सहयोग, परिश्रम, बड़ों का सम्मान करना, ईमानदारी इत्यादि हेतु परिपक्व किया जाता था। कुछ वर्षो पूर्व तक भी विद्यार्थियों को विद्यालय में नैतिक शिक्षा के रूप में पाठ्यक्रम आधारित ज्ञान दिया जाता था, ताकि बालकों में सामाजिक, नैतिक मूल्यों के साथ–साथ सकारात्मक सोच भी विकसित होती थी। वे समाज में अच्छे कार्य कर स्वयं के साथ–साथ अन्य व्यक्तियों को भी प्रेरणा देते थे, जिससे परिवार व समाज में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का निरत्रत विकास होता रहता है। वर्तमान में बालकों के नैतिक पक्ष पर प्रकाश डाले तो नैतिक गुणों की अति आवश्यकता है जिससे उनकी सोच सकारात्मक होगी और वह सफल नागरिक बनकर समाज एवं राष्ट्र का उत्थान कर सकेगें।

शोध का औचित्यः–

इस शोध के माध्यम से बालकों में नैतिक मूल्यों का उन्नयन होगा जिससे वह स्वयं, परिवार, समाज, राष्ट्र को लाभान्वित कर सकेगा। बालक नैतिक मूल्यों को आत्मसात कर सकारात्मक सोच रखने वाले सुसभ्य नागरिक बन सकेगा। वर्तमान समाज की बढ़ती विषमताओं से स्वयं को बचाकर एक आदर्श स्थापित करेगा। इस शोध अध्ययन के परिणामों व निष्कर्षो द्वारा शिक्षा जगत के समस्त अवयव (शिक्षक, विद्यार्थियों, अभिभावक) आदि लाभान्वित हो सकेगें।

परिभाषिक शब्दावलीः–

1 मूल्य :– आदर्श विश्वास या मानक है जिन्हे सम्पूर्ण समाज एवं समाज का बड़ा अंश धारण किये हुए है।

2 विषमतायेंः– नैतिक पतन, सामाजिक कुरीतियॉ एवं व्यभिचार।

3 सुसभ्य नागरिकः– नैतिक, मानसिक, शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं आदर्श व्यक्तिव।

उद्देश्यः–

1 विद्यालयों में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं सकारात्मक सोच का पता लगाना।

2 वर्तमान में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों से सकारात्मक सोच को आत्मसात करने में आने वाली कठिनाइयों एवं उनके सम्भावित समाधान ज्ञात करना।

3 नैतिक मूल्यों एवं सकारात्मक सोच के आवर्धन हेतु सुझाव प्राप्त किये गये है।

सीमांकनः–

चूरू जिले के 4 विद्यालयः– 1 रामावि0 ठठावता, चूरू 2 राबाउप्रावि0, बीनादेसर

3 राबाउप्रावि0, ठठावता 4 राउमावि0 भरपालसर, रतनगढ़, चूरू

न्यादर्शः–

4 विद्यालयों के कक्षा 6 से 10 तक के कुल 40 विद्यार्थी, संस्था प्रधान कुल 4, शिक्षक कुल 12, अभिभावक कुल 8।

प्रयुक्त सांख्यिकीः– प्राप्त प्रतिशत औसत के आधार पर निकाला गया है।

शोध उपकरणः– प्रश्नावलियॉः 1 संस्था प्रधानों हेतु 2 शिक्षकों हेतु 3 विद्यार्थियों हेतु 4 अभिभावकों हेतु।

परिकल्पनाः–

प्रायः विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच निरन्तर न्यून हो रही है।

उपकरण क्र–1

संस्था प्रधान प्रश्नावली का प्रश्नवार विश्लेषण

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1	क्या आप प्रार्थना सभा में प्रेरक उद्बोधन देते है ?	100	–
2	क्या आप नियमित रूप से विद्यालय की स्वच्छता का निरीक्षण करते है ?	100	–
3	क्या आप समय–समय पर नशा मुक्ति स्वच्छता संबंधी रैली निकालकर गॉव वालो को जागरूक करते है ?	100	–
4	क्या आप 'विद्यालय एक निगाह में' सूचना पट्ट का नियमित संधारण करते है ?	25	75
5	क्या आप अभिभावकों से विद्यार्थियों के नैतिक आचरण के उन्नयन के बाबत् वार्तालाप करते है ?	75	25
6	क्या मूल्य परक शिक्षा का मुख्य आधार परिवार होता है ?	100	–
7	क्या आप गॉव से जाकर विद्यालयय की समस्याओं को जनप्रतिनिधियों के सामने रखते है ?	75	25
8	क्या आप सरकार द्वारा संचालित गतिविधियों को समय पर सुचारू रूप से विद्यालय में संचालित करते है ?	100	–
9	क्या आप विद्यार्थियों के खेलकूद विज्ञान प्रदर्शनी में उपलब्धि करने पर उन्हे प्रोत्साहित करते है ?	100	–
10	क्या आप अधीनस्थ कर्मचारियों एवं बालकों, गॉव वालों को अपने व्यवहार से संतुष्ट कर पाते है ?	100	–

संस्था प्रधान प्रश्नावली की प्रश्नवार व्याख्या–

1 शत प्रतिशत संस्था प्रधान सभा में प्रेरक उद्बोधन देते है।

2 शत प्रतिशत संस्था प्रधान नियमित रूप से विद्यालय की स्वच्छता का निरीक्षण करते है।

3 शत प्रतिशत संस्था प्रधान समय–समय पर नशा मुक्ति व स्वच्छता की रैली निकाल कर गॉव वालों को जागरूक करते है।

4 25 प्रतिशत संस्था प्रधान '' विद्यालय एक निगाह में'' सूचना पट्ट का नियमित संधारण करते है।

5 75 प्रतिशत संस्था प्रधान विद्यार्थियों के नैतिक आचरण के उन्नयन हेतु अभिभावकों से बात करते

है।

6 शत प्रतिशत संस्था प्रधानों का मानना है कि मूल्य परक शिक्षा का मुख्य आधार परिवार है।

7 75 प्रतिशत संस्था प्रधान विद्यालय की समस्याओं को जनप्रतिनिधियों के समक्ष रखते है।

8 शत प्रतिशत संस्था प्रधान सरकार द्वारा संचालित गतिविधियों को विद्यालय मे समय पर संचालित

करवाते है।

9 शत प्रतिशत संस्था प्रधान विद्यार्थियों के खेलकूद, विज्ञान प्रदर्शनी आदि में उपलब्धि प्राप्त करने

में उन्हे प्रोत्साहित करते है।

10 शत प्रतिशत संस्था प्रधान अपने अधीनस्थ कर्मचारियों, विद्यार्थियों, गॉव वालों को अपने व्यवहार

से संतुष्ट कर पाते है।

उपकरण क्र–2

शिक्षक हेतु प्रश्नावली का प्रश्नवार विश्लेषण–

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1	क्या आप प्रार्थना सभा में प्रेरक प्रसंग सुनाने के लिए बालकों को प्रेरित करते है ?	100	–
2	क्या आप समय पर आकर विद्यालय की स्वच्छता पर ध्यान देते है ?	100	–
3	क्या आप आर्थिक रूप से पिछड़े बालकों की मदद करते है ?	100	–
4	क्या आप बालसभा एवं उत्सवों पर नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच से संबंधित नाटकों का मंचन करवाते है ?	62.5	37.5
5	क्या आप नशा एवं धुम्रपान के उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों व स्वच्छता के बारे में विद्यार्थियों को व्यापक रूप से अवगत कराते है ?	100	–
6	क्या आप कक्षा में किसी बात की घरेलू समस्या के कारण उदास रहने पर उनके माता–पिता को समझाते है ?	100	–
7	क्या आपको आर्थिक रूप से पिछड़े बालकों को नियमित रखने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ?	75	25
8	क्या आप संस्था प्रधान द्वारा विद्यालय में चलायी गयी गतिविधियों में सहयोग एवं सुझाव देते है ?	100	–
9	क्या आप परीक्षा परिणाम बनाते समय भेदभाव का भाव मन में लाते है ?	–	100
10	क्या आप महान पुरूषों की जीवनियों को कक्षा में सुनाकर नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच का आदर्श प्रस्तुत करते	100	–

	है?		

1 शत प्रतिशत शिक्षकों के मतानुसार प्रार्थना सभा में प्रेरक प्रसंग सुनाने के लिए बालकों को प्रेरित

करते है।

2 100 प्रतिशत शिक्षक विद्यालय की स्वच्छता पर ध्यान देते है।

3 100 शिक्षक आर्थिक रूप से पिछड़े बालकों की मदद करते है।

4 100 प्रतिशत शिक्षक परीक्षा परिणाम बनाने में भेदभाव नही करते।

5 62.5 प्रतिशत शिक्षक बालसभा में नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच से संबंधित नाटकों का

मंचन करवाते है।

6 100 प्रतिशत शिक्षक नशे व धूम्रपान के दुष्परिणामों एवं स्वच्छता के बारे में विद्यार्थियों को अवगत

कराते है।

7 100 प्रतिशत शिक्षक बालक की घरेलू समस्या के कारण उदास रहने पर उसके माता–पिता को

समझाते है।

8 75 प्रतिशत शिक्षकों को आर्थिक रूप से पिछड़े बालकों को नियमित रखने में कठिनाई का

सामना करना पड़ता है।

9 100 प्रतिशत शिक्षक संस्था प्रधान द्वारा संचालित गतिविधियों में सहयोग, सुझाव व क्रियान्वयन

करते है।

10 100 प्रतिशत शिक्षक महान पुरूषों की जीवनियों को कक्षा में सुनाकर नैतिक शिक्षा व सकारात्मक

सोच का आदर्श प्रस्तुत करते है।

उपकरण क्र0 – 3

विद्यार्थी हेतु प्रश्नावली का प्रश्नवार विश्लेषण–

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1	क्या आप विद्यालय आते समय छोटे बालकों को साथ लाने, ले जाने में मदद करते है ?	100	–
2	क्या आप प्रार्थना सभा की व्यवस्था में सहयोग करते है ?	100	–
3	क्या आप कक्षा–कक्ष में शिक्षक के काम करते समय शैतानी करते है ?	100	–
4	क्या आप कमजोर सहपाठियों को विषय वस्तु समझने में मदद करते हैं ?	46.6	53.3

5	क्या मध्यान्ह समय में भोजन परोसने एवं व्यवस्था में सहयोग करते है?	93.33	6.66
6	क्या आप असहाय व्यक्ति जैसे– अंधे व्यक्ति की सड़क पार करने या अन्य काम में मदद करते हैं ?	100	–
7	क्या आप अपनी पढ़ाई या अन्य काम समय पर व्यवस्थित करते हैं ?	100	–
8	क्या आप पौधरोपण व उनकी सुरक्षा में मदद करते हैं ?	86.66	13.33
9	क्या आप स्वच्छता संबंधित जानकारी, मौसमी बिमारी की जानकारी को आप परिवार व समाज में प्रसारित करते हैं ?	100	–
10	क्या आप विद्यालय में होने वाले उत्सव व बालसभा में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं ?	80	20

1 शत प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय जाते समय छोटे बालकों को साथ ले जाने व लाने में मदद करते

है।

2 शत प्रतिशत विद्यार्थी प्रार्थना सभा की व्यवस्था में सहयोग करते है।

3 46.6 प्रतिशत विद्यार्थी कक्षा में शिक्षक के काम करते है तथा समय शैतानी करते है जबकी 53.

3 प्रतिशत विद्यार्थी शैतानी नही करते है।

4 93.33 प्रतिशत विद्यार्थी कमजोर सहपाठियों को विषय वस्तु समझाने में मदद करते है।

5 शत प्रतिशत विद्यार्थी मध्यान्ह समय में भोजन परोसने व अन्य काम में मदद करते है।

6 शत प्रतिशत विद्यार्थी असहाय व्यक्ति की सड़क पार करने या अन्य काम में मदद करते है।

7 86.66 प्रतिशत विद्यार्थी अपनी पढ़ाई या अन्य काम समय पर और व्यवस्थित ढंग से करते है।

8 शत प्रतिशत विद्यार्थी पौधरोपण व उनकी सुरक्षा में मदद करते है।

9 शत प्रतिशत विद्यार्थी स्वच्छता व मौसमी बीमारियों की जानकारी को परिवार व समाज में प्रसारित

करते है।

10 80 प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय में होने वाले उत्सवों व बालसभा में सक्रिय रूप से भाग लेते है।

उपकरण क्र0 –4

अभिभावक हेतु प्रश्नावली का प्रश्नवार विश्लेषण–

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1	क्या आप समय–समय पर विद्यालय जाकर बालक की शैक्षिक स्तर की प्रगति के बारें में शिक्षक से सम्पर्क करते हैं ?	100	–

2	क्या आप घर पर बालक के सहयोगी गतिविधि एवं सकारात्मक सोच के लिए प्रोत्साहित करते हैं ?	100	—
3	क्या आप बालिकाओं की शिक्षा एवं समग्र विकास पर ध्यान देते हैं ?	100	—
4	क्या आप बालक द्वारा अच्छी बात बताने पर उसे आत्मसात करते है ?	100	—
5	क्या आप आर्थिक तंगी के कारण बालक की पढ़ाई को नजरअंदाज करते हैं ?	37.5	62.5
6	क्या आप कुरीतियों, अंधविश्वासों एवं व्यसनों के प्रभाव से बालक को दूर रखते हैं ?	100	—
7	क्या आप विद्यालय में होने वाले उत्सवों व पेरेन्टस मीटिंग में उपस्थित रहते हैं ?	62.5	37.5
8	क्या आपके परिवार में आप या वरिष्ठजनों द्वारा धार्मिक व नैतिक कहानियॉ सुनायी जाती हैं ?	75	25
9	क्या आप विद्यालय की सम्पति एवं परिसर को सुरक्षित रखने में सहयोग करते हैं ?	100	—
10	क्या आप विद्यालय में चलने वाली गतिविधियों पर निगाह रखते हुए सुझाव देते हैं ?	87.5	12.5

अभिभावक प्रश्नावली की प्रश्नवार व्याख्या–

1 शत प्रतिशत अभिभावक विद्यालय जाकर बालक की शैक्षिक प्रगति के बारे में जानकारी लेते है।

2 100 प्रतिशत अभिभावक परस्पर बालकों को सहयोगी गतिविधि एवं सकारात्मक सोच के लिए प्रोत्साहित करते है।

3 100 प्रतिशत अभिभावक बालिकाओं की शिक्षा एवं समग्र विकास पर ध्यान देते है।

4 100 प्रतिशत अभिभावक बालक द्वारा बताई गई अच्छी बातों को आत्मसात करते है।

5 37.5 प्रतिशत अभिभावक आर्थिक तंगी के कारण बालक की पढ़ाई को नजरअंदाज करते है जबकी 62.5 प्रतिशत अभिभावक ऐसा नही करते है।

6 100 प्रतिशत अभिभावक कुरितियों, अंधविश्वासों एवं व्यसनों के प्रभाव से बालक को दूर रखते है।

7 62.5 प्रतिशत अभिभावक विद्यालय में होने वाले उत्सवों व अभिभावकों की मीटिंग में लेते है तथा

37.5 प्रतिशत अभिभावक ऐसा नही करते है।

8 75 प्रतिशत अभिभावकों ने माना कि परिवार में वरिष्ठजनों द्वारा धार्मिक व नैतिक कहानियॉ सुनाई जाती है।

9 100 प्रतिशत अभिभावक विद्यालय की सम्पति एवं परिसर को सुरक्षित रखने में सहयोग करते है।

10 87.5 प्रतिशत अभिभावक विद्यालय में चलने वाली गतिविधियों में निगाह रखते है।

उद्देश्य आधारित निष्कर्षः–

1 वर्तमान में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं सकारात्मक सोच में सतत गिरावट देखी गई है। विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों में नैतिकता व सकारात्मक सोच पर आधारित पाठ्यपुस्तक की कमी देखी गई। पाठ्य पुस्तकों में महान व्यक्तियों की जीवनियों से संबंधित प्रेरक प्रसंग भी नही पढाये जाते है। अधिकांश अभिभावक बालकों में नैतिकता के स्थान पर अर्थाजन को प्राथमिकता देते है चाहे अर्थाजन अन्याय पूर्वक ही किया गया हों।

2 पाठ्य पुस्तकों में राष्ट्र नायकों की जीवनियों पर आधारित प्रेरक प्रसंग होना चाहिए। विद्यालयों में सतत् रूप से नैतिकता, सकारात्मक सोच, राष्ट्रीयता आदि विषयों पर वार्तायें, वाद–विवाद, अभिनय आदि कार्यक्रम/प्रतियोगिता में होना चाहियें। संस्थाप्रधान शिक्षक तथा अन्य प्रबुद्धजनों द्वारा समय–समय पर प्रेरक वार्ताये आयोजित की जानी चाहियैं

सुझावः–

1 विद्यार्थी को नैतिक शिक्षा देने के लिए उनके सामने शिक्षको, अभिभावको को नैतिक आचरण करना चाहिए। बच्चे बड़ों का अनुसरण करते है और अपने शिक्षकों व माता–पिता का आचरण देखकर नैतिक शिक्षा ग्रहण करेगें।

2 संस्था प्रधानों, शिक्षकों व अभिभावकों को समय–समय पर विद्यार्थियों को प्रेरक प्रसंग सुनाने चाहिए ताकि बच्चों में नैतिकता का विकास हों।

3 विद्यालयों में समय–समय पर नैतिक नाटकों का मंचन करवाया जाना चाहिए। जिससे विद्यार्थी देखकर नैतिकता का पाठ पढ़ सके।

4 विद्यार्थियों को अपने से छोटे विद्यार्थियों व कमजोर विद्यार्थियों की मदद करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में दूसरों की मदद करने के गुण आयेगें।

उपसंहारः–

विद्यार्थियों को नैतिकता का पाठ पढ़ाना आवश्यक है क्योकि विद्यार्थी ही बड़े होकर देश के जिम्मेदार नागरिक बनेगें। नैतिकता के अभाव में देश में अराजकता, भ्रष्टाचार, व आतंकवाद का माहौल हो जाता है। इसलिए बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाना आवश्यक है इससे वे स्वयं भी सकारात्मक जीवन जी सकें और देश के योग्य नागरिक बन सकें। वर्तमान में नैतिकता के अभाव में अनेक जुर्म हो रहे है जैसे छेड़छाड़, चोरी, हत्या आदि। अतः विद्यार्थियों के बचपन से ही नैतिकता का पाठ पढाना अत्यन्त आवश्यक है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

डर्फ स्तरीय शोध 2021–22 संस्था प्रधान हेतु अभिमत / प्रश्नावली

शीर्षक– विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच के विकास का समीक्षात्मक अध्ययन।

विद्यालय का नामः–

संस्था प्रधान का नामः–

क्र.स.	प्रश्नावली	हॉ	नहीं
1	क्या आप प्रार्थना सभा में प्रेरक उद्बोधन देते है ?	हॉ	नहीं
2	क्या आप नियमित रूप से विद्यालय की स्वच्छता का निरीक्षण करते है ?	हॉ	नहीं
3	क्या आप समय–समय पर नशा मुक्ति स्वच्छता संबंधी रैली निकालकर गॉव वालो को जागरूक करते है ?	हॉ	नहीं
4	क्या आप 'विद्यालय एक निगाह में' सूचना पट्ट का नियमित संधारण करते है ?	हॉ	नहीं
5	क्या आप अभिभावकों से विद्यार्थियों के नैतिक आचरण के उन्नयन के बाबत् वार्तालाप करते है ?	हॉ	नहीं
6	क्या मूल्य परक शिक्षा का मुख्य आधार परिवार होता है ?	हॉ	नहीं
7	क्या आप गॉव से जाकर विद्यालयय की समस्याओं को जनप्रतिनिधियों के सामने रखते है ?	हॉ	नहीं
8	क्या आप सरकार द्वारा संचालित गतिविधियों को समय पर सुचारू रूप से विद्यालय में संचालित करते है ?	हॉ	नहीं
9	क्या आप विद्यार्थियों के खेलकूद विज्ञान प्रदर्शनी में उपलब्धि करने पर उन्हे प्रोत्साहित करते है ?	हॉ	नहीं
10	क्या आप अधीनस्थ कर्मचारियों एवं बालकों, गॉव वालों को अपने व्यवहार से संतुष्ट कर पाते है ?	हॉ	नहीं

संस्था प्रधान हस्ताक्षर **शोधार्थी हस्ताक्षर**

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

डर्फ स्तरीय शोध 2021–22 शिक्षक हेतु अभिमत / प्रश्नावली

शीर्षक– विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच के विकास का समीक्षात्मक अध्ययन।

विद्यालय का नामः–

शिक्षक का नामः–

क्र.स.	प्रश्नावली	हॉ	नहीं
1	क्या आप प्रार्थना सभा में प्रेरक प्रसंग सुनाने के लिए बालकों को प्रेरित करते है ?	हॉ	नहीं
2	क्या आप समय पर आकर विद्यालय की स्वच्छता पर ध्यान देते है ?	हॉ	नहीं
3	क्या आप आर्थिक रूप से पिछड़े बालकों की मदद करते है ?	हॉ	नहीं
4	क्या आप बालसभा एवं उत्सवों पर नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच से संबंधित नाटकों का मंचन करवाते है ?	हॉ	नहीं
5	क्या आप नशा एवं धुम्रपान के उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों व स्वच्छता के बारे में विद्यार्थियों को व्यापक रूप से अवगत कराते है ?	हॉ	नहीं
6	क्या आप कक्षा में किसी बात की घरेलू समस्या के कारण उदास रहने पर उनके माता–पिता को समझाते है ?	हॉ	नहीं
7	क्या आपको आर्थिक रूप से पिछड़े बालकों को नियमित रखने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ?	हॉ	नहीं
8	क्या आप संस्था प्रधान द्वारा विद्यालय में चलायी गयी गतिविधियों में सहयोग एवं सुझाव देते है ?	हॉ	नहीं
9	क्या आप परीक्षा परिणाम बनाते समय भेदभाव का भाव मन में लाते है ?	हॉ	नहीं
10	क्या आप महान पुरूषों की जीवनियों को कक्षा में सुनाकर नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच का आदर्श प्रस्तुत करते है?	हॉ	नहीं

शिक्षक हस्ताक्षर **शोधार्थी हस्ताक्षर**

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

डर्फ स्तरीय शोध 2021–22 विद्यार्थी हेतु अभिमत / प्रश्नावली

शीर्षक– विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच के विकास का समीक्षात्मक अध्ययन।

विद्यालय का नामः–

विद्यार्थी का नामः–

क्र.स.	प्रश्नावली	हॉ	नहीं
1	क्या आप विद्यालय आते समय छोटे बालकों को साथ लाने, ले जाने में मदद करते है ?	हॉ	नहीं
2	क्या आप प्रार्थना सभा की व्यवस्था में सहयोग करते है ?	हॉ	नहीं
3	क्या आप कक्षा–कक्ष में शिक्षक के काम करते समय शैतानी करते है ?	हॉ	नहीं
4	क्या आप कमजोर सहपाठियों को विषय वस्तु समझने में मदद करते हैं ?	हॉ	नहीं
5	क्या मध्यान्ह समय में भोजन परोसने एवं व्यवस्था में सहयोग करते है?	हॉ	नहीं
6	क्या आप असहाय व्यक्ति जैसे– अंधे व्यक्ति की सड़क पार करने या अन्य काम में मदद करते हैं ?	हॉ	नहीं
7	क्या आप अपनी पढ़ाई या अन्य काम समय पर व्यवस्थित करते हैं ?	हॉ	नहीं
8	क्या आप पौधरोपण व उनकी सुरक्षा में मदद करते हैं ?	हॉ	नहीं
9	क्या आप स्वच्छता संबंधित जानकारी, मौसमी बिमारी की जानकारी को आप परिवार व समाज में प्रसारित करते हैं ?	हॉ	नहीं
10	क्या आप विद्यालय में होने वाले उत्सव व बालसभा में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं ?	हॉ	नहीं

विद्यार्थी हस्ताक्षर **शोधार्थी हस्ताक्षर**

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

डर्फ स्तरीय शोध 2021–22 अभिभावक हेतु अभिमत / प्रश्नावली

शीर्षक– विद्यार्थियों में नैतिक शिक्षा एवं सकारात्मक सोच के विकास का समीक्षात्मक अध्ययन।

विद्यालय का नामः–

अभिभावक का नामः–

क्र.स.	प्रश्नावली	हॉ	नहीं
1	क्या आप समय–समय पर विद्यालय जाकर बालक की शैक्षिक स्तर की प्रगति के बारें में शिक्षक से सम्पर्क करते हैं ?	हॉ	नहीं
2	क्या आप घर पर बालक के सहयोगी गतिविधि एवं सकारात्मक सोच के लिए प्रोत्साहित करते हैं ?	हॉ	नहीं
3	क्या आप बालिकाओं की शिक्षा एवं समग्र विकास पर ध्यान देते हैं ?	हॉ	नहीं
4	क्या आप बालक द्वारा अच्छी बात बताने पर उसे आत्मसात करते है ?	हॉ	नहीं
5	क्या आप आर्थिक तंगी के कारण बालक की पढ़ाई को नजरअंदाज करते हैं ?	हॉ	नहीं
6	क्या आप कुरीतियों, अंधविश्वासों एवं व्यसनों के प्रभाव से बालक को दूर रखते हैं ?	हॉ	नहीं
7	क्या आप विद्यालय में होने वाले उत्सवों व पेरेन्टस मीटिंग में उपस्थित रहते हैं ?	हॉ	नहीं
8	क्या आपके परिवार में आप या वरिष्ठजनों द्वारा धार्मिक व नैतिक कहानियॉ सुनायी जाती हैं ?	हॉ	नहीं
9	क्या आप विद्यालय की सम्पति एवं परिसर को सुरक्षित रखने में सहयोग करते हैं ?	हॉ	नहीं
10	क्या आप विद्यालय में चलने वाली गतिविधियों पर निगाह रखते हुए सुझाव देते हैं ?	हॉ	नहीं

अभिभावक हस्ताक्षर **शोधार्थी हस्ताक्षर**

1 शोध शीर्षकः– विधार्थियों में सृजनात्मक चिंतन शक्ति का उनके व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में।

2 शोधकर्ता का नाम :–

1 चन्द्रकला खीचड़, व्याख्याता डाइट,चूरू

2 कल्पना दईया , अध्यापक, राउमावि, सातड़ा

3 जयचन्द राबिया, अध्यापक, राउप्रावि, राऊताल, राजगढ़

3 प्रस्तावना व औचित्यः–

सृजनात्मक चिंतन एक सहज मानवीय प्रवृति है। इसका प्रयोग व्यक्ति प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान में करता है। व्यक्तिगत मूल्य एक भावना है जो क्रियाओं से निर्मित होती है। सृजनात्मक चिंतन शक्ति का विकास शिक्षक, बालकों के व्यक्तिगत गुणों को ध्यान में रखकर कर सकते है एवं उनके मूल्यों को समझ सकते है। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की चिन्तन शक्ति का उनके व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। शिक्षक सृजनशील विद्यार्थियों को उचित वातावरण प्रदान कर उनकी प्रतिभा को विकसित करने का सुअवसर प्रदान कर सकता है।

विद्यार्थी अपने सृजनात्मक चिंतन का प्रयोग जीवन की विभिन्न परिस्थितियों एवं चुनौतियों का सामना करते हुए कभी न कभी करता है। इसे एक विशेष प्रकार का समस्या समाधान भी कहा जा सकता है। सृजनात्मक चिंतन के कारण प्रत्येक विद्यार्थी प्रत्येक समस्या को अपने अलग–अलग व्यक्तिगत मूल्यों के द्वारा अलग–अलग अंदाज में हल करने का प्रयास करते है।

सृजनात्मकता विद्यार्थी एवं उसके द्वारा प्रयोग किए गए दृष्टिकोणों में एक विशिष्टता परिलक्षित करती है। वास्तव में संसार के समस्त प्राणियों में सृजनात्मकता पाई जाती है– किसी व्यक्ति में कम मात्रा में सृजनात्मकता होती है तो किसी व्यक्ति में अधिक मात्रा में सृजनात्मकता होती है। जो विद्यार्थी अधिक सृजनात्मक होते है वे अधिक संवेदनशील, जिज्ञासु, खोजपरक व नवीन वातावरण में ढलने वाले होते है।

4 उद्देश्य :–

शोध के उद्देश्य निम्नानुसार है–

1 प्रत्येक विद्यार्थी के अध्ययन को प्रभावी बनाने में सृजनात्मकता सहायक सिद्ध होगी इसका निष्कर्ष

निकालना।

2 यह कक्षा–कक्ष व जीवन में आने वाली समस्याओं को प्रौन्नत तरीके से हल करने में विद्यार्थियों के सहायक होगी।

3 बालकों की सृजनात्मकता का विशेष क्षेत्र जाकर इस क्षेत्र के विकास के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है।

4 विद्यार्थी अपनी सृजनात्मकता को किसी भी क्षेत्र में अभिव्यक्त करता है तो वह सृजनकर्ता के लिए प्रसन्नता का स्त्रोत होती है।

5 शोध परिकल्पनाः–

1 सृजनशीलता द्वारा बालक के सर्वागीण व्यक्तित्व का निर्माण उचित वातावरण प्रदान कर हो सकेगा क्योंकि प्रत्येक प्राणी में सृजनात्मकता किसी न किसी रूप में जन्मजात उपस्थित होती है जिसे प्रशिक्षण द्वारा ओर अधिक प्रभावी रूप प्रदान किया जायेगा।

2 सृजनशीलता द्वारा बालक अनुपयोगी वस्तुओं को उपयोगी वस्तुओं को उपयोगी वस्तुओं में परिवर्तित करेगा व स्वयं के सामने आने वाली समस्याओं का समाधान उचित परिस्थिती अनुरूप करेगा।

3 सृजनात्मक चिंतन शिक्षण को प्रभावी स्वरूप प्रदान करेगा।

6 न्यादर्शः–

चूरू जिले के 6 राजकीय विद्यालयों का चयन किया गया। जिसमें कक्षा 6 से 8 के कुल 60 विद्यार्थी, 6– संस्थाप्रधान व 18 शिक्षक।

7 शोध के अध्ययन का सीमांकनः–

चूरू जिले के 6 विद्यालय–

1 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, न0 14 चूरू

2 राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय,नवीन चूरू

3 राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, टीडियासर चूरू

4 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, राणासर जैतासर, चूरू

5 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, राऊताल, राजगढ़, चूरू

6 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, मघाऊ, राजगढ़, चूरू

8 प्रयुक्त सांख्यिकीः–

प्राप्त प्रतिशत औसत के आधार पर निकाला गया है।

9 शोध उपकरण व अध्ययन विधिः–

सर्वेक्षणात्मक अध्ययन विधि शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावलियॉ–

1 संस्था प्रधान हेतु

2 शिक्षक हेतु

3 विद्यार्थियों हेतु

10 शोध का दत्त संकलन व विश्लेषणः–

विद्यार्थियों मे सृजनात्मक चिंतन शक्ति उनके व्यक्तित्व, शिक्षण कार्य व समग्र विकास में सहायक है। प्रत्येक विद्यार्थी किसी न किसी क्षेत्र में सृजनात्मक होता है उसे विशेष (अनुकूल) वातावरण व प्रशिक्षण देकर ओर अधिक विकसित किया जा सकता है।

उपकरण क्र0–1

संस्थाप्रधान प्रश्नावली का प्रश्नवार विश्लेषण–

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1	आप बालकों के सृजनात्मक चिंतन से परिचित है।	100	–
2	सृजनात्मक चिंतन व कक्षा गतिविधियों बालक की समस्याओं के निराकरण में सहायक है।	100	–
3	आपने अवलोकन किया कि प्रत्येक विधार्थी में सृजनात्मकता जन्मजात होती है।	90	10
4	उचित वातावरण देकर सृजनात्मक चिंतन को बालक में कभी भी विकसित किया जा सकता है।	100	–
5	प्रत्येक विधार्थी में उसके व्यक्तिगत मूल्यों को प्रदर्शित/प्रभावित करता है।	80	20
6	सृजनात्मक चिंतन विधार्थियों के शिक्षण कार्य के विकास मे सहायक होता है।	100	–
7	प्रत्येक विधार्थी का सृजनात्मक चिंतन अलग–अलग प्रकार का होता है।	100	–
8	सृजनात्मक चिंतन वाले विधार्थी जिज्ञासावस प्रश्न पुछते है।	100	–
9	सृजनात्मक बालक अनुपयोगी वस्तुओं को उपयोगी वस्तु में परिवर्तित कर देता है।	100	–

10	प्रबल जिज्ञासा रखने वाला बालक सृजनशील होता है।	80	20

संस्था प्रधान प्रश्नावली की प्रश्नवार व्याख्या–

1 शत प्रतिशत संस्था प्रधान बालकों के सृजनात्मक चिंतन से परिचित है।

2 शत प्रतिशत संस्था प्रधान कक्षा गतिविधियों का निरीक्षण करते है।

3 90 प्रतिशत संस्था प्रधान विद्यार्थियों में मौजूद जन्मजात सृजनात्मकता का अवलोकन करते है।

4 शत प्रतिशत संस्था प्रधान मानते है कि उचित वातावरण द्वारा बालकों में सृजनात्मकता विकसित

होती है।

5 80 प्रतिशत संस्था प्रधान देखते है कि सृजनात्मक चिंतन विद्यार्थी के व्यक्तिगत मूल्यों को

प्रभावित करता है।

6 शत प्रतिशत संस्था प्रधान के अनुसार सृजनात्मक चिंतन शिक्षण कार्य के विकास में सहायक है।

7 शत–प्रतिशत संस्था प्रधान के अनुसार प्रत्येक विद्यार्थी का सृजनात्मक चिंतन अलग–अलग है।

8 शत–प्रतिशत संस्था प्रधान यह मानते है कि सृजनात्मक चिंतन वाला बालक प्रबल जिज्ञासा

रखते है।

9 शत–प्रतिशत के अनुसार सृजनात्मक बालक वस्तुओं की उपयोगिता को बढ़ावा देता है।

10 80 प्रतिशत संस्था प्रधान के अनुसार प्रबल जिज्ञासा वाला बालक सृजनशील होता है।

उपकरण क्र0 –2

शिक्षक प्रश्नावली का प्रश्नवार विश्लेषण–

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1	आप बालकों के सृजनात्मक चिंतन से परिचित है।	100	–
2	सृजनात्मक चिंतन व कक्षा गतिविधियों बालक की समस्याओं के निराकरण में सहायक है।	100	–
3	आपने अवलोकन किया कि प्रत्येक विधार्थी में सृजनात्मकता जन्मजात होती है।	80	20
4	उचित वातावरण देकर सृजनात्मक चिंतन को बालक में कभी भी विकसित किया जा सकता है।	80	20
5	प्रत्येक विधार्थी में उसके व्यक्तिगत मूल्यों को प्रदर्शित/प्रभावित करता है।	100	–
6	सृजनात्मक चिंतन विधार्थियों के शिक्षण कार्य के विकास मे सहायक होता है।	100	–
7	प्रत्येक विधार्थी का सृजनात्मक चिंतन अलग–अलग प्रकार का होता है।	90	10

8	सृजनात्मक चिंतन वाले विधार्थी जिज्ञासावस प्रश्न पुछते है।	100	–
9	सृजनात्मक बालक अनुपयोगी वस्तुओं को उपयोगी वस्तु में परिवर्तित कर देता है।	100	–
10	प्रबल जिज्ञासा रखने वाला बालक सृजनशील होता है।	100	–

शिक्षक प्रश्नावली की प्रश्नवार व्याख्या–

1 प्रत्येक शत–प्रतिशत शिक्षक बालकों के सृजनात्मक चिंतन से परिचित है।

2 शत–प्रतिशत शिक्षक सृजनात्मक चिंता को कक्षा–कक्ष में बालकों की समस्याओं के निराकरण में

सहायक के रूप में काम लेते है।

3 80 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि सृजनात्मकता बालकों में जन्मजात होती है।

4 80 प्रतिशत शिक्षक के अनुसार उचित द्वारा विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास किया जा सकता है।

5 शत–प्रतिशत शिक्षक मानते है कि बालक में सृजनात्मकता व्यक्तिगत मूल्यों को प्रदर्शित करती है।

6 शत–प्रतिशत शिक्षक यह स्वीकार करते है कि सृजनात्मकता शिक्षण को सरल बनाती है।

7 90 प्रतिशत शिक्षक के अनुसार प्रत्येक विद्यार्थी का सृजनात्मक चिंतन अलग–अलग प्रकार का होता है।

8 शत–प्रतिशत शिक्षक के अनुसार सृजनात्मक बालक जिज्ञासु होते है।

9 शत–प्रतिशत शिक्षक यह मानते है कि सृजनात्मक विद्यार्थी अनुपयोगी वस्तुओं को भी उपयोग योग्य बना देता है।

10 शत–प्रतिशत शिक्षक के अनुसार प्रबल जिज्ञासा वाला बालक ही सृजनात्मकता द्वारा अपने भविष्य व जीवन को सुन्दर बनाता है।

उपकरण क0 3

विद्यार्थी प्रश्नावली का प्रश्नवार विश्लेषण–

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1	आप किसी समस्या का समाधान अपने अनुभव द्वारा कर सकते है।	90	10
2	आप में किसी वस्तु जैसे (सिलाई,कढ़ाई,खेलना) के प्रति प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न होती है।	100	–
3	आप अध्ययन कार्य में स्वयं द्वारा निर्मित तरीके अपनाते है।	100	–
4	विद्यालय के साथ–साथ समाज की समस्याओं का समाधान भी सरलता से कर लेते है।	75	25
5	आप किसी काम न आने वाली वस्तु को उपयोगी वस्तु में परिवर्तित	80	20

	कर लेते है।		
6	आपकी सृजनात्मकता निदानात्मक कार्यो में उपयोगी है।	100	–
7	सृजनात्मक चिंतन आपके व्यक्तित्व को प्रभावी बनाता है।	100	–
8	सृजनात्मक चिंतन शैक्षिक व सहशैक्षिक कार्यो को प्रभावित करता है।	100	–
9	सृजनात्मक चिंतन कठिन विषयों को सरलता से सीखने समझने में सहायक है।	90	10
10	सृजनात्मक चिंतन आपके जीवन को सही दिशा प्रदान करता है।	80	20

विद्यार्थी प्रश्नावली की प्रश्नवार व्याख्या–

1 90 प्रतिशत बालक अपने अनुभव द्वारा समस्या का समाधान करते है।

2 शत–प्रतिशत विद्यार्थी शैक्षिक सहायक कार्य में जिज्ञासा रखते है।

3 शत–प्रतिशत विद्यार्थी अध्ययन में अपने तरीकों का प्रयोग करते है।

4 75 प्रतिशत विद्यार्थी ही समाज की समस्याओं का समाधान करने में रूचि रखते है।

5 80 प्रतिशत विद्यार्थी अनुपयोगी वस्तु को उपयोगी वस्तु में बदल देते है।

6 शत–प्रतिशत बालक स्वयं की समस्या का निदान कर लेते है।

7 शत–प्रतिशत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को उनका सृजनात्मक चिंतन प्रभावित करता है।

8 शत–प्रतिशत विद्यार्थियों के शैक्षिक व सहशैक्षिक कार्यो को सृजनात्मक चिंतन प्रभावित करता है।

9 90 प्रतिशत विद्यार्थी सृजनात्मक चिंतन के कारण कठिन विषयों को सरल बना देते है।

10 80 प्रतिशत यह मानते है कि सृजनात्मकता जीवन को सही दिशा प्रदान करता है।

उद्देश्य आधारित निष्कर्षः–

विद्यार्थियों में सृजनात्मकता के विकास और पोषण को प्रमुख रूप से अग्रलिखित स्तरों पर अवश्यम्भावी बनाया जा सकता है– प्रथम बालकों के स्तर पर और द्वितीय के स्तर पर

1 बालकों के स्तर पर–

बालक को स्वयं को प्रसन्नता देने वाले कार्य करने दें।

बालक चित्त को शांत रखने हेतु मनन व आत्मचिंतन करें।

प्रकृति के सानिध्य में अपना कुछ समय व्यतीत करें।

कल्पनाओं को शब्द, ब्रश या वस्तुओं की सहायता से नूर्त रूप देने का प्रयास करें।

बालकों को अध्ययन की आदतों का विकास करना चाहिए जिससे उनमें नवीन कल्पनाओं व विचारों को जन्म लेने का अवसर मिलता है।

2 शिक्षकों के स्तर परः–

शिक्षकों को विद्यार्थियों को ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए जिससे उनमें वैचारिकता का प्रवाह बना रहे।

विद्यार्थियों के व्यक्त कौशलों के अतिरिक्त उन्हें अन्य कौशलों के विषय में जानने हेतु प्रेरित करें।

कक्षा कार्य व गृहकार्य ऐसा हो जिसमें विद्यार्थी अपनी योग्यता व रूचि के आधार पर कार्य कर सकें।

सृजनात्मकता को अधिगम का महत्वपूर्ण हिस्सा मानें।

विद्यार्थियों के संवेगात्मक झुकाव को जानकर उसका प्रयोग सृजनात्मक कार्य के लिए करें।

निश्चय की किसी समाज के विकास के लिए सृजनात्मकता एक आवश्यक शर्त है। सृजनात्मकता ही वह तत्व है जो किसी भी समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में सक्षम है। अतः किसी भी समाज या राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक है कि शिक्षा को इस प्रकार संरचित किया जाए कि सृजनात्मकता के प्रकटीकरण का अवसर प्रत्येक बालक को मिले साथ ही उसके विकास और पोषण को भी बढ़ावा मिले। अतः शिक्षकों का यह दायित्व है कि वे बच्चों में ऐसे गुणों का विकास करें जिससे बच्चे स्वभाव से सृजनात्मक बनें।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

शोध शीर्षकः–विधार्थियों में सृजनात्मक चिंतन शक्ति का उनके व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन।

विद्यालय का नाम.....

संस्था प्रधान का नाम.....

निर्देशः–

1 पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे।
2 आपकी सभी बातें गोपनीय रखी जाएगी।
3 मतों के सामने उत्तर दे।

संस्था प्रधान प्रश्नावली

1 आप बालकों के सृजनात्मक चिंतन से परिचित है। सहमत/असहमत

2 सृजनात्मक चिंतन व कक्षा गतिविधियों बालक की समस्याओं के निराकरण में सहायक है।

सहमत/असहमत

3 आपने अवलोकन किया कि प्रत्येक विधार्थी में सृजनात्मकता जन्मजात होती है।

सहमत / असहमत

4 उचित वातावरण देकर सृजनात्मक चिंतन को बालक में कभी भी विकसित किया जा सकता है।

सहमत / असहमत

5 प्रत्येक विधार्थी में उसके व्यक्तिगत मूल्यों को प्रदर्शित / प्रभावित करता है। सहमत / असहमत

6 सृजनात्मक चिंतन विधार्थियों के शिक्षण कार्य के विकास मे सहायक होता है। सहमत / असहमत

7 प्रत्येक विधार्थी का सृजनात्मक चिंतन अलग–अलग प्रकार का होता है। सहमत / असहमत

8 सृजनात्मक चिंतन वाले विधार्थी जिज्ञासावस प्रश्न पुछते है। सहमत / असहमत

9 सृजनात्मक बालक अनुपयोगी वस्तुओं को उपयोगी वस्तु में परिवर्तित कर देता है। सहमत / असहमत

10 प्रबल जिज्ञासा रखने वाला बालक सृजनशील होता है। सहमत / असहमत

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

शोध शीर्षकः–विधार्थियों में सृजनात्मक चिंतन शक्ति का उनके व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन।

विद्यालय का नाम.....

शिक्षक का नाम.....

निर्देशः–

1 पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे।
2 आपकी सभी बातें गोपनीय रखी जाएगी।
3 मतों के सामने उत्तर दे।

शिक्षक प्रश्नावली

1 आप बालकों के सृजनात्मक चिंतन से परिचित है। सहमत/असहमत

2 सृजनात्मक चिंतन व कक्षा गतिविधियों बालक की समस्याओं के निराकरण में सहायक है।

सहमत/असहमत

3 आपने अवलोकन किया कि प्रत्येक विधार्थी में सृजनात्मकता जन्मजात होती है। सहमत/असहमत

4 उचित वातावरण देकर सृजनात्मक चिंतन को बालक में कभी भी विकसित किया जा सकता है।

सहमत/असहमत

5 प्रत्येक विधार्थी में उसके व्यक्तिगत मूल्यों को प्रदर्शित/प्रभावित करता है। सहमत/असहमत

6 सृजनात्मक चिंतन विधार्थियों के शिक्षण कार्य के विकास मे सहायक होता है। सहमत/असहमत

7 प्रत्येक विधार्थी का सृजनात्मक चिंतन अलग–अलग प्रकार का होता है। सहमत/असहमत

8 सृजनात्मक चिंतन वाले विधार्थी जिज्ञासावस प्रश्न पुछते है। सहमत/असहमत

9 सृजनात्मक बालक अनुपयोगी वस्तुओं को उपयोगी वस्तु में परिवर्तित कर देता है। सहमत/असहमत

10 प्रबल जिज्ञासा रखने वाला बालक सृजनशील होता है। सहमत/असहमत

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

शोध शीर्षकः–विधार्थियों में सृजनात्मक चिंतन शक्ति का उनके व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन।

विद्यालय का नाम.....

विधार्थी का नाम.....

निर्देशः–

1 पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे।
2 आपकी सभी बातें गोपनीय रखी जाएगी।
3 मतों के सामने उत्तर दे।

छात्र प्रश्नावली

1 आप किसी समस्या का समाधान अपने अनुभव द्वारा कर सकते है। सहमत/असहमत

2 आप में किसी वस्तु जैसे (सिलाई,कढ़ाई,खेलना) के प्रति प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

सहमत / असहमत

3 आप अध्ययन कार्य में स्वयं द्वारा निर्मित तरीके अपनाते है। सहमत / असहमत

4 विद्यालय के साथ–साथ समाज की समस्याओं का समाधान भी सरलता से कर लेते है।

सहमत / असहमत

5 आप किसी काम न आने वाली वस्तु को उपयोगी वस्तु में परिवर्तित कर लेते है। सहमत / असहमत

6 आपकी सृजनात्मकता निदानात्मक कार्यो में उपयोगी है। सहमत / असहमत

7 सृजनात्मक चिंतन आपके व्यक्तित्व को प्रभावी बनाता है। सहमत / असहमत

8 सृजनात्मक चिंतन शैक्षिक व सहशैक्षिक कार्यो को प्रभावित करता है। सहमत / असहमत

9 सृजनात्मक चिंतन कठिन विषयों को सरलता से सीखने समझने में सहायक है।

सहमत / असहमत

10 सृजनात्मक चिंतन आपके जीवन को सही दिशा प्रदान करता है।

सहमत / असहमत

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

डर्फ स्तरीय शोध

सत्र 2021–22

'' प्रतिवेदन लेखन''

1 शोध शीर्षक–

'' उच्च प्राथमिक विद्यालय में पोर्टफोलियों संधारण में आनें वाली समस्याएं व उनका निराकरण करनें का एक प्रयास''

2 शोधकर्ता–

1 श्रीमती सरोज बेनिवाल, अध्यापक, रा.बा.उ.प्रा.विद्यालय, हड़ियाल,तारानगर, चूरू

योग्यता–एम.एड, एम.फिल

2 श्रीमती सुमित्रा बेनीवाल, अध्यापक, रा.उ.मा.विद्यालय, झाड़सर छोटा, चूरू

योग्यता– एम.ए, बी.एड.

3 मार्गदर्शक– आईएफआईसी प्रभाग, श्रीमती चन्द्रकला खीचड़, व्याख्याता, डाइट, चूरू

4 शोध की प्रस्तावना–

शिक्षा का अधिकार (आर.टी.ई.) 2009 के अन्तर्गत राज्य में विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर का लेखा–जोखा रखनें के लिए एक फाइल या बस्ता संधारण किया जाता है जिसे पोर्टफोलियो कहते है। इस फाइल में बालक के व्यक्तिगत, पारिवारिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक आदि प्राप्त उपलब्धियों व खेल–कूद प्रगति की जानकारी संबंधित दस्तावेज संधारित किये जाते है।

एसआईक्यूई कार्यक्रम के अन्तर्गत बालक के सर्वागींण विकास केक लिए कई प्रयास किये जाते है। गतिविधि आधारित शिक्षण को कक्षा–कक्ष में किया जाता है जो रचनात्मक शिक्षण तथा सम्पूर्ण कार्य के साथ पेपर–पेन्सिल प्रगति अर्थात् योगात्मक मूल्यांकन किया जाता है। इन सभी दस्तावेजों पर अध्यापक टिप्पणी करता है। बालक ने क्या सीखा व किस गति से वह सीख रहा है इसकी सम्पूर्ण जानकारी एक शिक्षक को करनी होती है।

ये सम्पूर्ण दस्तावेज पोर्टफोलियो में संधारण किये जाते है। समय व परिस्थितियों के अनुसार दस्तावेज संधारण के अनेक निर्देश दिये जाते है। इस कार्य में कई अध्यापकजन को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना होता है। उनकी इन समस्याओं का सामना होता है।

पोर्टफोलियों छात्र को अपनी भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करनें का अवसर प्रदान करता है अध्यापक भी छात्र को उन गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है जो छात्र के साथ कक्षा–कक्ष के बाहर घटित हो रही होती है। यह एक समयावधि के छात्र द्वारा किये गये कार्य का संग्रह होता है। यह एक समग्र रिकॉर्ड प्रस्तुत करता है। यह विद्यार्थियों के दिन–प्रतिदिन के कार्य का संग्रह होता है। यह एक समग्र रिकॉर्ड प्रस्तुत करता है। यह विद्यार्थियों के दिन–प्रतिदिन के कार्य या उनके कार्यों में किस का चुनाव होता है। इससे छात्र का कौशल व ज्ञान किस प्रकार विकसित होता है उसकी एक छवि उभरकर सामनें आती है। यही विद्यार्थियों को उनके कार्यो के बारे में बतानें और प्रदर्शन करनें के लिए प्रेरित करता है।

छात्र अधिगम और आकलन प्रकिया में सकिय रूप से भाग लेता है। सन् 2019 में निष्ठा प्रशिक्षण में पोर्टफोलियो संधारण पर विशेष बल दिया गया था लेकिन कोविड–19 की परिस्थितियों से इसमें कई परिवर्तन करनें पड़े।

शोधकर्त्ता ने अपने शोध में स्माईल 2.0 व आओ घर में सीखे तथा स्माईल 3.0 कार्यक्रम के अन्तर्गत पोर्टफोलियो संधारण की समस्या के निराकरण हेतु मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डालनें का प्रयास किया है जो इस प्रकार से है–

i. **स्माईल 2.0 कार्यक्रम, आओ घर में सीखे** के अन्तर्गत पोर्टफोलियो संधारण के इस प्रकार से करें– श्रीमान् निदेशक महोदय द्वारा दिये गए निर्देशानुसार स्माईल 2.0 कार्यक्रम के तहत आओ घर में सीखे द्वारा राज्य के लगभग 64000 विद्यालयों में कियान्वित किया गया। इस हेतु निम्नानुसार कार्य किये गये–

1.1 **शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को कॉल करना–**

सप्ताह के प्रत्येक सोमवार को शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को ऑनलाइन स्माइल 2.0 पर

कक्षावार व विषयवार पठन सामग्री ऑनलाइन लिंक पर प्रेषित की गई साथ ही गृहकार्य भी संलग्न किया गया जिसकी मॉनिटरींग पीईईओ, सीबीईओ व सीडीईओ द्वारा की गई।

1.2 वाट्सऐप समूहों के द्वारा प्रत्येक बुधवार को रिपोर्ट प्राप्त कर दस्तावेज पोर्टफोलियो में संधारण किए गये।

ii. **क्विज में विद्यार्थियों की भागीदारी–** शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों की शत–प्रतिशत भागीदारी हेतु प्रयास किया गया तथा वाट्सऐप समूहों द्वारा प्रत्येक बुधवार एवं शुक्रवार रिपोर्ट अपलोड विषयाध्यापक द्वारा की गई तथा कक्षाध्यापकों द्वारा भी की गई तथा क्विज की वर्कशीट पोर्टफोलियों में संधारण करना सुनिश्चित किया गया। स्माईल 3.0 कार्यक्रम पोर्टफोलिया फाइल संधारण आओ घर में सीखे–2 कार्यक्रम इस प्रकार से है–

2.1 प्रत्येक सोमवार को कक्षा 1 से 5 तक के लिए स्माईल संदेश के साथ होमवर्क, वर्कशीट साझा की जाती है।

2.2 प्रत्येक सोमवार और बुधवार को कक्षा 6 से 12 के लिए स्माईल संदेश के साथ होमवर्क वर्कशीट साझा की जाती है।

2.3 यह होमवर्क वर्कशीट उस सप्ताह साझा की गई डिजिटल सामग्री पर आधारित होगी।

2.4 जहां तक संभव हो इन कार्यपत्रकों/वर्कशीट्स को विद्यार्थियों के साथ रूप में (वाट्सऐप समूह के माध्यम से) साझा किया जाना सुनिश्चित है।

2.5 शिक्षकों को विद्यार्थियों द्वारा भरी गयी वर्कशीट्स को वाट्सऐप समूह से एकत्र करना है। और उन्हें विद्यालय में बनाए गये विद्यार्थियों के पोर्टफोलियों में रखना है।

2.6 जिन विद्यार्थियों के पास डिजिटल पहुंच नहीं है, शिक्षकों को विद्यार्थियों के घर विजिट समय वर्कशीट को प्रिंट करके विद्यार्थियों को वितरित करना है तथा अगल विजिट में शिक्षकों को वह वर्कशीट एकत्र करनी है और उन्हें विद्यालय में बनाए गये विद्यार्थी पोर्टफोलियो में संधारण करना है।

2.7 इसके लिए व्यय कम्पोजिट स्कूल ग्रान्ट एवं विद्यार्थी कोष में से किये जानें की अनुमति एतद् द्वारा प्रदान की जाती है। इस प्रकार का निर्देश श्रीमान निदेशक महोदय द्वारा दिया गया है।

iii. **गृहकार्य–** प्रत्येक सोमवार प्रतिसप्ताह विद्यार्थियों को गृहकार्य आवंटन की रिपोर्ट प्रत्येक मंगलवार को साझा की गई तथा उनके कार्य के दस्तावेज पोर्टफोलियो में संधारण किये गये।

iv. **विद्यार्थी तक पहुंच का प्रपत्र–** प्रतिदिन विद्यार्थियों से वाट्सऐप समूहों द्वारा कार्य की प्रगति की रिपोर्ट प्राप्त करनें का प्रयास शिक्षकों द्वारा किया गया।

5 शोध की आवश्यकता व औचित्य–

राज्य सरकार द्वारा मूल्यांकन प्रक्रिया के अन्तर्गत पोर्टफोलियो संधारण में दिये गये दस्तावेजों को शामिल कर उसके आधार पर बालक को कक्षौन्त करने के निर्देश दिये गये है वस्तुस्थिति में आने वाली समस्याओं के कारण मूल्यांकन प्रभावित हो रहा है। इसका निराकरण करनें पर मूल्यांकन प्रक्रिया भी उचित स्थिति में हुई तथा इसके संधारण में शिक्षकों के सामने अनेक कठिनाइयां व समस्याएं उत्पन्न हो रही है तो शोधकर्ता नें इस विषय पर शोध करके वास्तविक स्थिति की जानकारी लेकर उनकी समस्याओं को हल करनें का एक प्रयास इस शोध प्रपत्र द्वारा करने की सोची।

6 शोध के उद्देश्य–

इस शोध के उद्देश्य इस प्रकार से है–

(क) कोविड–19 की परिस्थितियों में शिक्षक को पोर्टफोलियों संधारण में आने वाली समस्याओं की वस्तुस्थिति का अध्यापन करना।

(ख) पोर्टफोलियो संधारण करने के लिए स्माइल 2.0 व स्माइल 3.0 कार्यक्रम के निर्देशों के आधार पर कार्य की प्रगति का अवलोकन कर अपेक्षानुरूप परिवर्तनों का अध्ययन करना।

(ग) बालकों को स्वयं के पोर्टफोलियों संधारण करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास करना।

(घ) मूल्यांकन प्रक्रिया पोर्टफोलियों की महत्ता समझाने का एक प्रयत्न करना।

7 शोध की परिकल्पना–

प्रस्तुत शोध के लिए शोधकर्त्ता ने इन परिकल्पनाओं को प्राप्त करने का प्रयास किया है जो इस प्रकार है–

(क) शिक्षक ऑनलाइन व ऑफलाइन शिक्षण प्रगति के लिए वर्कशीट, कार्यपत्रक, क्विजकार्य व अन्य दस्तावेज को पोर्टफोलियों में संधारित कर सकेगें।

(ख) विद्यार्थियों को अपनी पोर्टफोलियो के प्रति जानकारी हेतु प्रोत्साहित किया जा सकेगा।

(ग) शिक्षा का अधिकार के अन्तर्गत पोटफोलियो के दस्तावेजों की महत्ता का ज्ञान शिक्षक व छात्र दोनों को हो सकेगा।

8 शोध की अध्ययन विधि–

प्रस्तुत शोध हेतु शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण अध्ययन विधि का प्रयोग किया है।

9 शोध का सीमांकन–

प्रस्तुत शोध की सीमा या कार्यक्षेत्र चूरू जिला के चार राजकीय विद्यालयों तक रखी गई है।

10 शोध का न्यादर्श–

1 रा.उ.प्रा.विद्यालय, ढाणी मोतीसिंह, तारानगर, चूरू

2 रा.उ.प्रा.विद्यालय, बास घण्टेल, चूरू

3 शहीद हैड कानि. पालसिंह रा.उ.मा.विद्यालय, जसरासर, चूरू

4 रा.बा.उ.प्रा.विद्यालय, दाउदसर, रतनगढ़, चूरू

11 शोध उपकरण–

प्रस्तुत शोध हेतु शोधकर्त्ता ने स्वयं द्वारा निर्मित उपकरणों का प्रयोग किया है जो इस प्रकार से हैं–

i. संस्थाप्रधान अवलोकनी
ii. अध्यापक अभिमतावली
iii. छात्र प्रश्नावली

12 शोध का दत्त संकलन–

प्रस्तुत शोध हेतु चार विद्यालय से संस्थाप्रधान द्वारा अवलोकनी भरी गई तथा प्रत्येक विद्यालय से दो–दो अध्यापक अभिमतावली भरी गई तथा प्रत्येक विद्यालय से दस–दस छात्र प्रश्नावली कुल 40 है इस प्रकार इस शोध के अन्तर्गत कुल 52 को शामिल किया गया है।

पोर्टफोलियों से संधारण की वस्तुस्थिति पूर्व व पोर्टफोलियो संधारण के महत्व को समझने के पश्चात की वस्तुस्थिति का तुलनात्मक अध्यापन का विश्लेषण शोधकर्त्ता ने T-test द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है–

क्र.स.		माध्य	परिमाप विचलन	माध्य	वर्गअन्तरा
1	वस्तुस्थिति पूर्व	17.4	12.0		
2	वस्तुस्थिति पश्चात्	24.4	6.36		
				7	3.70

13 शोध के दत्तो का विश्लेषण–

गणना के आधार पर टी का मान 3.70 व तालिका के आधार पर 99 प्रतिशत पर मान 2.54 है। अतः स्पष्ट है कि गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका के मान से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। गण्ना से प्राप्त माध्य का मान 24.4 व 17.4 है अतः स्पष्ट है पोर्टफोलियों संधारण करने के लिए कार्य योजना क्रियान्वित करना सार्थक है।

14 शोध का निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य व परिकल्पना के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि पोर्टफोलियो फाईल संधारण करने शिक्षक के सामने आने वाली कठिनाईयों का निवारण समय–समय पर दिये गये निर्देशों की पालना करके किया जा सकता है। शिक्षक व बालक दोनों को उनके पोर्टफोलियो फाइल की महत्ता समझानें से वे उत्साहित होकर कार्य करते है। पोर्टफोलियो मात्र

एक फाईल नही है इसका प्रयोग शिक्षा का अधिकार में भी अति महत्वपूर्ण स्थान है। यह बालक के मूल्यांकन प्रक्रिया पूरी करने में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज का अभिलेख है।

अतः पोर्टफोलियो फाइल का संधारण बहुत सुचारू व साफ सुन्दर तरीके से करना प्रत्येक अध्यापक का कार्य है।

15 शोध के सुझाव–

जिस प्रकार शोधकर्त्ता ने पोर्टफोलियो फाईल की समस्याओं को समझ कर उनका निराकरण करने का एक प्रयास किया है, उसी प्रकार विद्यालय के अन्य अभिलेख पर आने वाली समस्याओं पर शोध किया जा सकता है। जैसे– अध्यापक दैनिन्दनी डायरी, पाठ योजना आदि। पोर्टफोलियो फाइल को ऑनलाइन भी किया जा सकता है।

16 परिशिष्ट–

i. संस्थाप्रधान अवलोकनी
ii. अध्यापक अभिमतावली
iii. छात्र प्रश्नावली

16 संदर्भग्रन्थ–

प्रस्तुत शोध हेतु इन संदर्भ ग्रन्थों व साईट का उपयोग किया गया है–

i. गुगल
ii. विकिपिडिया
iii. यु–ट्युब
iv. राजकीय निर्देया प्रपत्र
v. निष्ठा प्रशिक्षण मॉड्युल

छात्र प्रश्नावली

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1	आप पोर्टफोलियों के बारे में जानते है।	95	5
2	आपकी फाइल कक्षा कक्ष में रखी जाती है।	75	25
3	आप दूसरे विद्यार्थियों की पोर्टफोलियों देखते है।	98	8
4	आप अपने पाठ्यक्रम के अतिरिक्त चित्रकला या अन्य गतिविधि के	65	35

	पत्रक अपनी पोर्टफोलियों में सहेजते हो।		
5	आपके अभिभावक विद्यालय आकर आपके पोर्टफोलियों में टिप्पणी करते है।	5	95
6	क्या आपको कक्षा कक्ष में अध्यापक से संवाद के दौरान संकोच आता है।	82	18
7	क्या आप विद्यालय में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेते हो।	85	15
8	क्या आपके पोर्टफोलियों में आपके व आपके माता/पिता के फोटो लगा रखे है।	25	75
9	क्या आप विद्यालय गतिविधियों की चर्चा घर जाकर करते हो।	92	8
10	क्या आपके माता/पिता आपसे विद्यालय की शैक्षिक /सहशैक्षिक गतिविधियों के बारे में आपसे चर्चा करते है।	85	15

संस्थाप्रधान अवलोकनी

विद्यालय का नाम.....

संस्थाप्रधान का नाम.....

पोर्टफोलियो फाईल संधारण हेतु मुख्य बिन्दुओं के आगे पूर्ण किये गये कार्य पर सही का निशान व अपूर्ण पर गलत का निशान लगावें–

क्र.स.	मुख्य बिन्दु	निशान
1	विद्याालय का नाम	
2	छात्र का नाम	
3	विद्यालय का डाईस कोड	
4	छात्र की फोटो	
5	नामांक	
6	कक्षा	
7	जाति	
8	वर्ग	
9	प्रवेशांक	
10	जन्म दिनांक, अंको व शब्दों में	
11	आधार कार्ड संख्या	
12	मोबाईल नं.	
13	पिता व माता का नाम	
14	प्रवेश दिनांक	
15	संरक्षक का नाम व विद्यार्थी से संबंध	
16	निवास स्थान मूल व वर्तमान	
17	स्वास्थ्य परीक्षण	
18	उपस्थिति स्थिति	
19	आधार रेखा मूल्यांकन	
20	हस्ताक्षर स्थिति	
21	आधार रेखा मूल्यांकन प्रपत्र की वस्तुस्थिति	
22	वर्कशीट पर टिप्पणी दिनांक हस्ताक्षर	
23	क्विज प्रपत्र की वस्तुस्थिति	
24	सहशैक्षिक गतिविधि दस्तावेज की वस्तुस्थिति	

शोध शीर्षकः—उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पार्टफोलियों संधारण में आनें वाली समस्याएं व उनका निराकरण करनें का एक प्रयास।

विद्यालय का नाम.....

अध्यापक का नाम.....

निर्देशः—

1 पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे।
2 आपकी सभी बातें गोपनीय रखी जाएगी।
3 मतों के सामने उत्तर दे।

अध्यापक प्रश्नावली

1 आपकी कक्षा के बच्चों की पोर्टफोलियों फाईल बनी हुई है। हॉ/नही

2 आपके बच्चें पोर्टफोलियों के पत्रक भरने में रूचि लेते है। हॉ/नही

3 आप पाठ्यक्रम के अतिरिक्त करवायी जाने वाली गतिविधियों के पत्रक भी फाइल में लगाते है। हॉ/नही

4 क्या आपके कक्षा के बच्चे अपनी मूल्यांकन प्रगति को स्वयं देखने के लिए उत्साहित है। हॉ/नही

5 आप साप्ताहिक पत्रक फाइल में लगाते हैं हॉ/नही

6 आप पोर्टफोलियों में अभिभावकों से टिप्पणी करवाते है। हॉ/नही

7 आप छात्र के संबंध में मित्रों से टिप्पणी करवाते है। हॉ/नही

8 छात्रों द्वारा तैयार किये गये ग्रीटिंग कार्ड/प्रोजेक्ट फाईल तथा विद्यालय के बाहर किये गये कार्यो के पत्रक भी पोर्टफोलियों में संलग्न करते है। हॉ/नही

9 पोर्टफोलियों में विद्यार्थियों का मूल्यांकन अंको में करने की बजाय बच्चें के द्वारा किये गये वास्तविक कार्य को डाला जाता हैं ।

सहमत/असहमत

10 पोर्टफोलियों मे बच्चे द्वारा किये गये सम्मिलित किया जाता न कि केवल बेहतरीन कार्य इसमें आपका क्या मत है।

सहमत/ असहमत

छात्र प्रश्नावली

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

शोध शीर्षकः—उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पार्टफोलियों संधारण में आनें वाली समस्याएं व उनका निराकरण करनें का एक प्रयास।

विद्यालय का नाम.....

विधार्थी का नाम.....

निर्देशः—

1 पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे।
2 आपकी सभी बातें गोपनीय रखी जाएगी।
3 मतों के सामने उत्तर दे।

छात्र प्रश्नावली

1 आप पोर्टफोलियों के बारे में जानते है। हॉ/नही

2 आपकी फाइल कक्षा कक्ष में रखी जाती है। हॉ/नही

3 आप दूसरे विद्यार्थियों की पोर्टफोलियों देखते है। हॉ/नही

4 आप अपने पाठ्यक्रम के अतिरिक्त चित्रकला या अन्य गतिविधि के पत्रक अपनी पोर्टफोलियों में सहेजते हो। हॉ/नही

5 आपके अभिभावक विद्यालय आकर आपके पोर्टफोलियों में टिप्पणी करते है। हॉ/नही

6 क्या आपको कक्षा कक्ष में अध्यापक से संवाद के दौरान संकोच आता है। हॉ/नही

7 क्या आप विद्यालय में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेते हो। हॉ/नही

8 क्या आपके पोर्टफोलियों में आपके व आपके माता/पिता के फोटो लगा रखे है। हॉ/नही

9 क्या आप विद्यालय गतिविधियों की चर्चा घर जाकर करते हो। हॉ/नही

10 क्या आपके माता/पिता आपसे विद्यालय की शैक्षिक /सहशैक्षिक गतिविधियों के बारे में आपसे चर्चा करते है। हॉ/नही

11 क्या आपके स्वास्थ्य संबंधी जांच के लिए विद्यालय में डॉक्टर/स्वास्थ्यकर्मी आते है। हॉ/नही

शोधकर्त्ता–

1 सुमेरसिंह पूनियां, व्याख्याता, डाइट, चूरू

2 जयप्रकाश, अध्यापक, राउमावि0, तेहनदेसर, बीदासर

3 अमित कुमार, अध्यापक, राउप्रावि0, तालणियां की ढ़ाणी, रतनगढ़

1 शोध शीर्षक–

'' अध्यापकों द्वारा स्टॉफ कॉर्नर की जानकारी व उपयोग में आने वाली समस्याओं का अध्ययन।''

2 प्रस्तावना–

'इन्टरनेट' शब्द को आज सभी लोग जानते है बच्चे हो या बड़े सभी लोग इसका प्रयोग करना अच्छी तरह से जानते है। अगर सही अर्थो में देखा जाए तो आज इन्टरनेट हम सभी के लिए जीने की वजह बन चुका है।

वर्तमान में मेट्रों, रेल्वे, व्यापारिक उधोग, दुकान, स्कूल, कॉलेज, शिक्षण संस्थान, एनजीओ, विश्वविद्यालय, कार्यालय में हर डाटा को कम्प्यूटीकृत करके बड़े स्तर पर इंटरनेट का प्रयोग किया जा सकता है।

वर्तमान में शिक्षा विभाग में भी इस बदलते युग के साथ इंटरनेट का प्रयोग किया जाने लगा है। ऑनलाइन शिक्षा, वेब शिक्षक, डिस्टेंस लर्निंग आदि का प्रयोग शिक्षा विभाग द्वारा किये जा रहें है। इसी के तहत राजसमसा, शालादर्पण राजस्थान का एक वेब पोर्टल है। जिसे भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के द्वारा एक सरकारी योजना के तहत चलाया जा रहा है। राजस्थान के इस शिक्षा पोर्टल का मुख्य उद्देश्य सभी सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के माता–पिता को उनके बच्चों से जुड़ी सभी पढ़ाई की रिपोर्ट ऑनलाइन देना है। इस पोर्टल को शुरू करने का सबसे बड़ा फायदा है कि राजस्थान की शिक्षा में सुधार करना है। स्टॉफ कार्नर पोर्टल से शिक्षा विभाग के कर्मचारियों के स्थानान्तरण आवेदन, अवकाश आवेदन, सेवा–पुस्तिका से संबंधित , एसीपी आवेदन, विभागीय पदोन्नतियॉ आवेदन, टीएएफ, स्माईल कार्यक्रम आदि का ऑनलाईन वन वे है। यह शिक्षा का नवाचार है।

2 शोध की आवश्यकता एवं औचित्य–

वर्तमान समय में देखा गया है कि अधिकांश अध्यापकों द्वारा आज भी स्टॉफ कार्नर के उपयोग व इसकी सम्पूर्ण जानकारी का अभाव पाया जाता है। अधिकांश अध्यापकों द्वारा तो पासवर्ड रिसेट जैसी छोटी सी समस्या का भी समाधान नहीं किया जा सकता है। वर्तमान समय में जब भी कार्य 'इंटरनेट' के माध्यम से ऑनलाइन किये जा रहे है तो ऐसे समय में समाज को आईना दिखाने वाले शिक्षकों को तो कम से कम अपने स्वयं के कार्य ऑनलाइन करने व स्कूल के कार्यो को ऑनलाइन करने आने चाहिए। साथ ही इस बात की भी आवश्यकता महसुस की गई है कि स्टॉफ कॉर्नर के उपयोग में कुछ तकनीकी बाधाएं भी उत्पन्न होती है जिन्हें खोजकर उनकें समाधान का प्रयास किया जा सकता है।

3 शोध के उद्देश्य–

i. अध्यापकों के स्टॉफ कार्नर की संज्ञानात्मक जानकारी की वस्तुस्थिति का अध्ययन।

ii. स्टॉफ कार्नर का अध्यापकों के उपयोग से संबंधित वस्तुस्थिति का अध्ययन।
iii. स्टॉफ कार्नर के उपयोग में आने वाली समस्याओं का अध्ययन।
iv. स्टॉफ कार्नर के उपयोग में आने वाली समस्याओं के निराकरण के प्रयास।

4 शोध की परिकल्पना–

स्टॉफ कार्नर की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होने के बाद अधिकांश अध्यापकों द्वारा सहजता से इसे उपयोग में लिया जा सकेगा। ब्राउजर व सर्वर डाउन जैसी समस्याओं के समाधान करना।

5 शोध उपकरण

स्वयं निर्मित प्रश्नावली

1 संस्था प्रधान के लिए।

2 शिक्षक के लिए।

6 शोध अध्ययन का सीमांकन–

चूरू जिले के 6 राजकीय विद्यालयों तक सीमित है।

7 न्यादर्श–

न्यादर्श के रूप में जिले के 6 राजकीय विद्यालयों का चयन किया गया। इन विद्यालयों में कार्यरत 6 संस्था प्रधान व 30 शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

क्र.स.	विद्यालय का नाम	संस्था प्रधान संख्या	शिक्षक संख्या
1	रा.उ.प्रा.विद्यालय,न.14, चूरू	1	5
2	रा.पी.के. बागला बा.उ.प्रा.वि.,चूरू	1	5
3	श्री एचपी. बुधिया रा.उ.मा.वि., रतननगर	1	5
4	शहीद जितेन्द्रसिंह राठौड़ रा.उ.मा.वि., थैलासर, चूरू	1	5
5	रा.उ.मा.वि., चांदगोठी,चूरू	1	5
6	रा.उ.मा.वि., ढाणी मौजी,चूरू	1	5

8 अध्ययन विधि–

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि से किया गया है।

9 दत्त विश्लेषण– संस्था प्रधान प्रश्नावली दत्त विश्लेषण–

i. स्टॉफ कार्नर के उपयोग व उसमें आने वाली समस्याओं में संस्था प्रधान प्रश्नावली से प्राप्त आकड़ों के आधार पर 100 प्रतिशत विद्यालयों में कम्प्युटर उपलब्ध है। 83 प्रतिशत विद्यालयों में इंटरनेट सेवा भी उपलब्ध है।
ii. प्रश्नावली से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर 100 प्रतिशत संस्था प्रधानों व शिक्षकों द्वारा कम्प्युटर का उपयोग किया जाता है।
iii. 67 प्रतिशत संस्था प्रधानों के कम्प्युटर पर कार्य करते समय इंटरनेट कनेक्टिवीटी से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
iv. केवल 50 प्रतिशत संस्था प्रधानों द्वारा ही स्टाफ कार्नर का कार्य स्वयं किया जाता है।

v. स्टॉफ कार्नर से संबंधित प्रश्नावली के आंकड़ों के आधार पर 33 प्रतिशत संस्था प्रधान स्टॉफ कार्नर के कार्य के लिए अन्य व्यक्तियों की सहायता लेते है।

vi. 67 प्रतिशत संस्था प्रधान यह मानते है कि उन्हें स्टॉफ कार्नर पर किये जाने वाले कार्यो की जानकारी है।

vii. 67 प्रतिशत संस्था प्रधान यह मानते है कि उन्हें स्टॉफ कार्नर का कार्य संपादित करने हेतु शालादर्पण प्रभारी की सहायता लेने की आवश्यकता महसुस होती है।

viii. प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 83 प्रतिशत संस्था प्रधान यह मानते है कि उन्हें स्टॉफ कार्नर का कार्य करने हेतु प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता महसुस होती है।

ix. 83 प्रतिशत संस्था प्रधान यह भी मानते है कि उन्हें कम्प्युटर का भी सामान्य प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता है।

शिक्षक प्रश्नावली दत्त विश्लेषण–

i. शिक्षक प्रश्नावली के प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 100 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा स्मार्टफोन का उपयोग किया जाता है। तथा शालादर्पण व स्टॉफ कार्नर का कार्य किया जाता है।

ii. शिक्षक प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार केवल 43 प्रतिशत शिक्षकों को ही स्टॉफ कार्नर की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त है।

iii. 67 प्रतिशत शिक्षक यह मानते है कि स्टाफ कार्नर का कार्य करते समय इंटरनेट कनेक्टिविटी से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

iv. प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 90 प्रतिशत शिक्षक यह मानते है कि शालादर्पण की वेबसाइट पर सर्वर डाउन की सबसे बड़ी समस्या है।

v. 83 प्रतिशत शिक्षकों को कर्मचारी आईडी व शालादर्पण की आईडी की जानकारी है।

vi. 83 प्रतिशत शिक्षकों के द्वारा ही राज्य सरकार द्वारा संचालित आरएससीआईटी का कोर्स किया हुआ है।

vii. 97 प्रतिशत शिक्षक यह मानते है कि स्टॉफ कार्नर उनके लिए उपयोगी साबित हुआ है।

viii. स्टाफ कार्नर के संबंधित प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़े यह बताते है कि 87 प्रतिशत शिक्षक स्टॉफ कार्नर के माध्यम से नवीन जानकारियों से परिचित होते है।

ix. 63 प्रतिशत शिक्षक इस बात को स्वीकारते है कि स्टॉफ कार्नर पर किये जाने वाले कार्यो को सुचारू रूप से संचालित किये जाने के लिए उन्हें प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता महसुस होती है।

संस्था प्रधान विश्लेषण तालिका–01

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1	क्या आपके विद्यालय में कम्प्युटर उपलब्ध है ।	100	—
2	अगर आपके विद्यालय में कम्प्युटर उपलब्ध है तो क्या इन्टरनेट सेवा उपलब्ध है।	83	17
3	क्या आपके द्वारा कम्प्युटर का उपयोग किया जाता है।	100	—
4	क्या आपके विद्यालय के अन्य शिक्षकों द्वारा भी कम्प्युटर का उपयोग किया जाता है।	100	—
5	आपके द्वारा व अन्य शिक्षकों के द्वारा कम्प्युटर का उपयोग करते समय इन्टरनेट पर किसी प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।	67	33
6	क्या सभी शिक्षकों द्वारा स्टाफ कार्नर पर स्वयं का कार्य बिना किसी समस्या के स्वयं पूर्ण किया जाता है।	50	50
7	आपकों व अन्य शिक्षकों के स्टाफ कार्नर के कार्य हेतु किसी अन्य व्यक्तियों से सहायता लेने की आवश्यकता पड़ती है।	33	67
8	आपको व विद्यालय के अन्य शिक्षकों को स्टाफ कार्नर पर किये जाने वाले सम्पूर्ण कार्यो की जानकारी है।	67	33
9	आपका विद्यालय जहॉ पर अवस्थित है उस क्षेत्र में इन्टरनेट कनेक्टिविटी की अच्छी स्पीड उपलब्ध है।	100	—
10	क्या हम सभी कार्यो के लिए शालादर्पण प्रभारी की मदद ली जाती है।	67	33
11	आपके द्वारा व अन्य स्टाफ द्वारा एडॉयड मोबाईल पर इन्टरनेट के माध्यम से स्टाफ कार्नर का कार्य किया जाता है।	100	—
12	क्या सभी शिक्षकों द्वारा मोबाईल पर स्टाफ कार्नर का कार्य सहायता से किया जाता है।	83	17
13	क्या आपके व आपके विद्यालय के अन्य शिक्षकों को स्टाफ कार्नर व शालादर्पण के संचालन के लिए एक प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा इसके बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता है।	83	17
14	क्या आपको व अन्य शिक्षकों को स्टाफ कार्नर का कार्य संपादन करने हेतु प्रशिक्षण प्रदान किये जाने की आवश्यकता है।	83	17
15	क्या आपको व सम्पूर्ण स्टाफ को कम्प्युटर का भी सामान्य प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता है।	83	17

शिक्षक विश्लेषण तालिका–02

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1	क्या आप स्मार्टफोन का उपयोग करते है।	100	—
2	क्या आप स्मार्टफोन से शालादर्पण व स्टाफ कार्नर पर काम करते है।	100	—
3	क्या आपके द्वारा इंटरनेट का प्रयोग किया जाता है।	100	—
4	क्या आपको शालादर्पण व स्टाफकार्नर की सम्पूर्ण जानकारी है।	43	57
5	क्या आपके कार्यक्षेत्र में इंटरनेट उपयोग में सुधार की आवश्यकता है।	93	07
6	क्या आपके द्वारा स्टाफकार्नर का उपयोग किया जाता है।	93	07
7	क्या स्टाफकार्नर पर कार्य करते समय परेशानियों का सामना करना पड़ता है।	67	33
8	क्या आपके द्वारा स्टाफकार्नर के सभी कार्य स्वयं के द्वारा किये जाते है।	67	33
9	क्या स्टाफकार्नर पर कार्य करते समय सर्वर डाउन की समस्या का सामना करना पड़ता है।	90	10
10	क्या आपको कर्मचारी आईडी तथा शालादर्पण स्टाफ आईडी की जानकारी है।	83	17
11	क्या आप बिना सहयोग के स्टाफ कार्नर से सीएल का आवेदन कर सकते है।	97	03
12	क्या आपने आरएससीआईटी कोर्स कर रखा है।	83	17
13	क्या स्टाफ कार्नर आपके लिए उपयोगी साबित हो रहा है।	97	03
14	क्या आप स्टाफ कार्नर के माध्यम से नवीन जानकारियों से परिचित होते है।	87	13
15	क्या आपको स्टाफ कार्नर के उपयोग से संबंधित प्रशिक्षण की आवश्कता है।	63	37

10 निष्कर्ष–

स्टॉफ कार्नर के माध्यम से वर्तमान समय में विद्यालयों में स्टॉफ की सम्पूर्ण जानकारी छात्र/छात्राओं का रिकॉर्ड, शिक्षकों के सम्पूर्ण कार्य, काउंसलिग, छुट्टी का आवेदन, टीएएफ, एपीआर जैसे सम्पूर्ण कार्य किये जाते है। इसके अलावा स्टॉफ कार्नर के उपयोग में कुछ तकनीकी बाधाएं भी उत्पन्न होती है। जिनके समाधान का प्रयास भी किया गया है।

50 शिक्षकों व संस्था प्रधानों के द्वारा ही स्टॉफ कार्नर पर कार्य स्वयं पूर्ण किया जाता है। स्टॉफ कार्नर के उपयोग में इंटरनेट कनेक्टिविटी भी एक गंभीर समस्या उभरकर सामने आयी है। शालादर्पण की वेबसाइट पर लगातार सर्वर डाउन जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। अधिकांश शिक्षकों को स्टाफ कॉर्नर के कार्य को संपादित करने हेतु प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता हुई है।

11 सुझाव–

अधिकांश संस्था प्रधान व शिक्षकों को स्टॉफ कार्नर का कार्य करने हेतु प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता है। अतः राज्य सरकार द्वारा इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाने से बेहतर परिणाम प्राप्त होगे।

विद्यालयों में इंटरनेट कनेक्टिविटी की सेवा उपलब्ध करवायी जाने की आवश्यकता है। इसके लिए राज्य सरकार से बजट आंवटन करे तो इस कार्य को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

12 परिशिष्ठ–

i. संस्था प्रधान प्रश्नावली
ii. शिक्षक प्रश्नावली

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

शोध शीर्षकः– अध्यापकों द्वारा स्टॉफ कार्नर की जानकारी व उपयोग तथा आने वाली समस्याओं का अध्ययन।

विद्यालय का नाम.....

संस्थाप्रधान का नाम.....

निर्देशः–1 पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे। 2 आपकी सभी बातं गोपनीय रखी जाएगी।

3 मतों के सामने उत्तर दे।

संस्थाप्रधान प्रश्नावली

1 क्या आपके विद्यालय में कम्प्युटर उपलब्ध है ।
हॉ/नही

2 अगर आपके विद्यालय में कम्प्युटर उपलब्ध है तो क्या इन्टरनेट सेवा उपलब्ध है।
हॉ/नही

3 क्या आपके द्वारा कम्प्युटर का उपयोग किया जाता है।
हॉ/नही

4 क्या आपके विद्यालय के अन्य शिक्षकों द्वारा भी कम्प्युटर का उपयोग किया जाता है।
हॉ/नही

5 आपके द्वारा व अन्य शिक्षकों के द्वारा कम्प्युटर का उपयोग करते समय इन्टरनेट पर किसी प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
हॉ/नही

6 क्या सभी शिक्षकों द्वारा स्टाफ कार्नर पर स्वयं का कार्य बिना किसी समस्या के स्वयं पूर्ण किया जाता है।

हॉ/नही

7 आपकों व अन्य शिक्षकों के स्टाफ कार्नर के कार्य हेतु किसी अन्य व्यक्तियों से सहायता लेने की आवश्यकता पड़ती है।
हॉ/नही

8 आपको व विद्यालय के अन्य शिक्षकों को स्टाफ कार्नर पर किये जाने वाले सम्पूर्ण कार्यो की जानकारी है।

हॉ/नही

9 आपका विद्यालय जहॉ पर अवस्थित है उस क्षेत्र में इन्टरनेट कनेक्टिविटी की अच्छी स्पीड उपलब्ध है।

हॉ/नही

10 क्या हम सभी कार्यो के लिए शालादर्पण प्रभारी की मदद ली जाती है।
हॉ/नही

11 आपके द्वारा व अन्य स्टाफ द्वारा एडॉयड मोबाईल पर इन्टरनेट के माध्यम से स्टाफ कार्नर का कार्य किया जाता है।
हॉ/नही

12 क्या सभी शिक्षकों द्वारा मोबाईल पर स्टाफ कार्नर का कार्य सहायता से किया जाता है। हॉ/नही

13 क्या आपके व आपके विद्यालय के अन्य शिक्षकों को स्टाफ कार्नर व शालादर्पण के संचालन के लिए एक प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा इसके बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता है। हॉ/नही

14 क्या आपको व अन्य शिक्षकों को स्टाफ कार्नर का कार्य संपादन करने हेतु प्रशिक्षण प्रदान किये जाने की आवश्यकता है।
हॉ/नही

15 क्या आपको व सम्पूर्ण स्टाफ को कम्प्युटर का भी सामान्य प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता है। हॉ/नही

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

शोध शीर्षकः– अध्यापकों द्वारा स्टॉफ कार्नर की जानकारी व उपयोग तथा आने वाली समस्याओं का अध्ययन।

विद्यालय का नाम.....

शिक्षक का नाम.....

निर्देशः–

1 पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे।
2 आपकी सभी बातें गोपनीय रखी जाएगी।
3 मतों के सामने उत्तर दे।

शिक्षक प्रश्नावली

1 क्या आप स्मार्टफोन का उपयोग करते है।	हॉ/नही
2 क्या आप स्मार्टफोन से शालादर्पण व स्टाफ कार्नर पर काम करते है।	हॉ/नही
3 क्या आपके द्वारा इंटरनेट का प्रयोग किया जाता है।	हॉ/नही
4 क्या आपको शालादर्पण व स्टाफकार्नर की सम्पूर्ण जानकारी है।	हॉ/नही
5 क्या आपके कार्यक्षेत्र में इंटरनेट उपयोग में सुधार की आवश्यकता है।	हॉ/नही
6 क्या आपके द्वारा स्टाफकार्नर का उपयोग किया जाता है।	हॉ/नही
7 क्या स्टाफकार्नर पर कार्य करते समय परेशानियों का सामना करना पड़ता है।	हॉ/नही
8 क्या आपके द्वारा स्टाफकार्नर के सभी कार्य स्वयं के द्वारा किये जाते है।	हॉ/नही
9 क्या स्टाफकार्नर पर कार्य करते समय सर्वर डाउन की समस्या का सामना करना पड़ता है।	हॉ/नही
10 क्या आपको कर्मचारी आईडी तथा शालादर्पण स्टाफ आईडी की जानकारी है।	हॉ/नही
11 क्या आप बिना सहयोग के स्टाफ कार्नर से सीएल का आवेदन कर सकते है।	हॉ/नही
12 क्या आपने आरएससीआईटी कोर्स कर रखा है।	हॉ/नही
13 क्या स्टाफ कार्नर आपके लिए उपयोगी साबित हो रहा है।	हॉ/नही
14 क्या आप स्टाफ कार्नर के माध्यम से नवीन जानकारियों से परिचित होते है।	हॉ/नही
15 क्या आपको स्टाफ कार्नर के उपयोग से संबंधित प्रशिक्षण की आवश्कता है।	हॉ/नही

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

'' राजकीय विद्यालयों की पीटीएम में अभिभावकों की उदासीनता के कारणों का अध्ययन।''

श्री गोविन्दसिंह राठौड़
प्रधानाचार्य, डाइट,चूरू
राजस्थान

श्री जगवीरसिंह पूनियां
अध्यापक,राउप्रावि0, मघाऊ, राजगढ़
एम.ए, एम.एड, नेट

श्रीमती कांता शर्मा
राउमावि0, खींवणसर, सरदारशहर
एम.ए, एम.एड.।

शोध शीर्षक–

'' राजकीय विद्यालयों की पीटीएम में अभिभावकों की उदासीनता के कारणों की जानकारी कर उनके निराकरण के प्रयास''

प्रस्तावना एवं शोध का औचित्य–

गैर सरकारी विद्यालयों में त्रैमासिक रूप से अध्यापक–अभिभावक बैठक का आयोजन किया जाता है। इस बैठक का उद्देश्य अभिभावकों को उनके बालकों की प्रगति से रूबरू करवाना व उनके व्यक्तित्व विकास में आ रही कठिनाइयों पर अभिभावकों से चर्चा करना। अभिभावक भी अपने बच्चे से संबंधित अपने विचारों तथा विद्यालय विकास पर चर्चा को अध्यापकों के साथ बांटते है। इससे बालकों को घर एवं विद्यालय में आ रही समस्याओं से निजात मिलती है व उनमें गुणात्मक विकास प्रदर्शित होता है। विद्यालय का भौतिक विकास भी पीटीएम का केन्द्रीय विषय होता है।

गत तीन वर्षो से शिक्षा विभाग ने भी यह पहल अपने सरकारी विद्यालयों में की है। इसका प्रचुर मात्रा में प्रचार प्रसार भी किया गया है। प्रिन्ट मिडिया, इलेक्ट्रानिक मिडिया का भी सहारा लिया गया लेकिन आकड़ों पर नजर डाले तो अधिकतर विद्यालयों में अभिभावकों की उपस्थिति काफी कम रही है। इसलिए इतनी अच्छी योजना के होते हुए भी पीटीएम में अभिभावकों की उदासीनता एक शोध का विषय है।

अभिभावक व शिक्षक दोनों का घनिष्ठ संबंध माना गया है क्योकि अभिभावक समुदाय का सदस्य है और बालक समुदाय से विद्यालय में आते है। अतः परिवार व विद्यालय में जैसे चरित्र, अनुशासन, नैतिकता आदि का विकास होता है। वैसे ही समाज का निर्माण होता है। यदि किसी बालक में किसी प्रकार की समस्या है जैसे– सामाजिक, अभद्रता व शिक्षा, संस्कार रहित आदि है तो न तो उसे अकेला शिक्षक निकाल सकता है और न ही अभिभावक निकाल सकता है। यह दोनो ही मिलकर उस समस्या का समाधान खोज सकते है इसी के कारण सरकारी विद्यालयों में भी गैर सरकारी विद्यालयों की तरह ही त्रैमासिक अभिभावक–शिक्षक बैठक का आयोजन करने की योजना का क्रियान्वयन किया गया है। यदि अभिभावक अपने बच्चों के विद्यालय में जायेगे तो वो अपने बच्चों के कार्यकलाप व शिक्षण के विषय में जान पायेगे तथा उसके पश्चात उनमें जो

कमियां है उन्हे वह शिक्षक के साथ मिलकर दूर करने का प्रयास करेगें। इसी उद्देश्य को मध्य नजर रखते हुए राजस्थान सरकार ने भी त्रैमासिक पीटीएम का आयोजन राजकीय विद्यालयों में करवाना शुरू किया है।

इसलिए इतनी अच्छी योजना जिसमें विद्यालय के विकास व बच्चों के सर्वागीण विकास की चर्चा हो रही है उसमें अभिभावक की उदासीनता एक चिंता का विषय है इसको मध्य नजर रखते हुए मैने इस विषय के कारणों व निदान पर अपना शोध करने का कार्य किया है।

शोध के उद्देश्य–

i. राजकीय विद्यालयों में अभिभावक–अध्यापक बैठक की वर्तमान स्थिति का पता लगाना।
ii. राजकीय विद्यालयों में शिक्षक–अभिभावक बैठक में अभिभावकों की उदासीनता के कारण्की जानकारी करना।
iii. शिक्षक–अभिभावक बैठक में अभिभावकों की उदासीनता के कारणों को दूर करने का प्रयास।

परिकल्पना–

प्रस्तुत शोध अभिभावकों में पीटीएम प्रोन्नति करने के प्रयासों से रूचि स्तर उत्पन्न की जा सकती है।

सीमांकन–

प्रस्तुत शोध चूरू जिले के राजकीय विद्यालयों तक सीमित रहेगा।

न्यादर्श–

प्रत्येक विद्यालय से दो बालक एक शिक्षक एक संस्था प्रधान एवं 2 अभिभावक योग 60।?

प्रयुक्त सांख्यिकी–

यह शोध ग्रफ प्रतिशत एवं औसत पर आधारित है।

शोधविधि–

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि से किया गया है

शोध उपकरण–

i. बालकों हेतु
ii. शिक्षकों हेतु
iii. संस्था प्रधान हेतु
iv. अभिभावक हेतु

विश्लेषण एवं व्याख्या–

प्रश्नवार दत्त विश्लेषण प्रश्नावली–1 (बालकों हेतु)

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1		100	–
2		100	–
3		50	50
4		70	30
5		100	–
6		100	–
7		15	85
8		15	85
9		25	75
10		50	50

दण्डाकार लेखाचित्र

बालक हेतु प्रश्नावली पर आधारित

प्रश्नवार व्याख्या प्रश्नावली–1 बालकों हतु–

i. 100 प्रतिशत बालकों के अनुसार उनके विद्यालय में पीटीएम का आयोजन किया जाता है।

ii. 100 प्रतिशत बालकों का मत है कि पीटीएम में भाग लेने हेतु उनके अभिभावकों को सूचित किया जाता है।

iii. 50 प्रतिशत बालकों के अनुसार पीटीएम की सूचना सार्वजनिक रूप से पोस्टर चस्पा कर दी जाती है।

iv. 70 प्रतिशत बालकों के अनुसार माता–पिता पीटीएम में भाग लेते है।

v. 100 प्रतिशत बालक मानते है कि पीटीएम के दौरान उनके अभिभावकों को उनके शैक्षिक स्तर की जानकारी दी जाती है।

vi. 100 प्रतिशत बालकों के अनुसार पीटीएम में अध्यापकों के व्यवहार से उनके अभिभावक संतुष्ट है।

vii. मात्र 15 प्रतिशत बालक ही मानते है कि पीटीएम में लेने हेतु उनके अभिभावकों के पास पर्याप्त समय है।

viii. मात्र 15 प्रतिशत बालकों के अनुसार उनके अभिभावक पीटीएम उतरान्त इसमें हुई बातों की चर्चा उनसे घर पर करते है।

ix. केवल 25 प्रतिशत बालक की बताते है कि पीटीएम की एक छोटी विडियों क्लिप बनायी जाती है।

x. 50 प्रतिशत बालकों के अनुसार उनके अभिभावकों के पीटीएम में अनुपस्थित रहने पर विद्यालय द्वारा स्मरण पत्र भिजवाया जाता है।

प्रश्नवार दत्त विश्लेषण प्रश्नावली–2 शिक्षकों हेतु

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1		100	–
2		90	10
3		10	90
4		100	–
5		100	–
6		50	50
7		90	10
8		50	50
9		100	–
10		90	10

शिक्षकों हेतु प्रश्नावली–2

i. 100 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनके विद्यालय में पीटीएम का आयोजन किया जाता है।

ii. 90 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि पीटीएम की सूचना आमंत्रण पत्र से एवं सार्वजनिक रूप से पोस्टर चस्पा कर दी जाती है।

iii. केवल 10 प्रतिशत शिक्षक ही मानते है कि पीटीएम में सभी बालकों के अभिभावक भाग लेते है।

iv. 100 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनके द्वारा पीटीएम में उपस्थित अभिभावकों को बालकों की रूचि के बारे में बताया जाता है।

v. 100 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनके द्वारा पीटीएम में उपस्थित अभिभावकों से बालकों की उपलब्धियों और कमियों के बारे में चर्चा की जाती है।

vi. 50 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि पीटीएम के दौरान उच्च उपलब्धियों वाले बालकों को अभिभावकों के समक्ष पारितोषित देकर सम्मानित किया जाता हैं

vii. 90 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि पीटीएम की कार्यवाही को रजिस्टर में संधारण कर अभिभावकों की टिप्पणी ली जाती है।

viii. 50 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि पीटीएम में अनुपस्थित रहे अभिभावकों को विद्यालय द्वारा स्मरण पत्र भिजवाया जाता है।

ix. 100 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनके द्वारा पीटीएम में अभिभावकों से विद्यालय के शैक्षिक एवं भौतिक विकास हेतु चर्चा की जाती है।

x. 90 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि पीटीएम के आयोजनों से विद्यालय के शैक्षिक एवं भौतिक वातावरण में सुधार हुआ है।

प्रश्नावली–3 संस्था प्रधान हेतु–

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1		100	–
2		100	–
3		–	100
4		100	–
5		100	–
6		100	–
7		70	30
8		90	10
9		80	20
10		60	40

प्रश्नवार व्याख्या प्रश्नावली–3 संस्था प्रधानों हेतु–

i. 100 प्रतिशत संस्था प्रधानों के अनुसार उनके विद्यालय में पीटीएम का नियमित आयोजन किया जाता है।

ii. 100 प्रतिशत संस्था प्रधानों के अनुसार वे पीटीएम में उपस्थित अभिभावकों को इसके महत्व पर उद्‌बोधन देते है।

iii. 100 प्रतिशत संस्था प्रधानों के अनुसार पीटीएम में सभी बालकों के अभिभावक उपस्थित नही होते है।

iv. 100 प्रतिशत संस्था प्रधानों के अनुसार पीटीएम में विषयाध्यापकों द्वारा अभिभावकों से उनके बालकों की रूचि, उपलब्धियों और कमियों के बारे में चर्चा की जाती है।

v. 100 प्रतिशत संस्था प्रधानों के अनुसार पीटीएम में उपस्थित अभिभावकों से वे विद्यालय के शैक्षिक व भौतिक विकास पर चर्चा करते है।

vi. 100 प्रतिशत संस्था प्रधानों के अनुसार उनके विद्यालय मे आयोजित पीटीएम की कार्यवाही का रजिस्टर में संधारण किया जाता है।

vii. 70 प्रतिशत संस्था प्रधान मानते है कि पीटीएम के दौरान उच्च उपलब्धि प्राप्त बालकों को उनके अभिभावकों के समक्ष सम्मानित किया जाता है।

viii. 90 प्रतिशत संस्था प्रधान मानते है कि पीटीएम के आयोजनों से विद्यालय के शैक्षिक व भौतिक वातावरण में सुधार हुआ है।

ix. 80 प्रतिशत संस्था प्रधान मानते है कि विद्यालय द्वारा पीटीएम हेतु आमंत्रण पत्र एवं सार्वजनिक रूप से पोस्टर चस्पा कर अभिभावकों को सूचित किया जाता है।

x. 60 प्रतिशत संस्था प्रधान मानते है कि पीटीएम में अनुपस्थित रहे अभिभावकों को विद्यालय की ओर से स्मरण पत्र भिजवाकर सूचित किया जाता है।

प्रश्नवार दत्त विश्लेषण प्रश्नावली–4 अभिभावकों हेतु–

क्र.स.	प्रश्न	उत्तर प्रतिशत में	
		हॉ	ना
1		100	–
2		80	20
3		95	05
4		100	–
5		100	–
6		100	–
7		45	55
8		85	15
9		100	–
10		15	85

प्रश्नवार व्याख्या प्रश्नावली–4 अभिभावकों हेतु–

i. 100 प्रतिशत अभिभावकों के अनुसार उन्हें विद्यालय द्वारा आयोजि पीटीएम में आमंत्रित किया जाता है।

ii. 80 प्रतिशत अभिभावक मानते है कि विधालय द्वारा पी टी एम के प्रचार – प्रसार हेतू सार्वजनिक स्थलों पर पोस्टर चस्पा किए जाते है।

iii. 95 प्रतिशत अभिभावक मानते है कि वे विधालय में आयोजित पी टी एम में जाते है।

iv. 100 प्रतिशत अभिभावकों के अनुसार संस्था प्रधान द्वारा पी टी एम के उद्देश्यों के बारे में बताया जाता है।

v. 100 प्रतिशत अभिभावकों के अनुसार पी टी एम में विषयाध्यापकों द्वारा उनके बालकों से सम्बन्धित जानकारी दी जाती है।

vi. 100 प्रतिशत अभिभावकों के अनुसार पी टी एम में विषयाध्यापकों द्वारा उनके बच्चे से सम्बन्धित दस्तावेज दिखाए जाते है।

vii. 45 प्रतिशत अभिभावक मानते है कि पी टी एम में उच्च उपलब्धियां प्राप्त करने वाले बालकों को विधालय द्वारा सम्मानित किया जाता है।

viii. 85 प्रतिशत अभिभावक मानते है कि वे पी टी एम के बाद घर पर शिक्षक द्वारा बताए गऐ बिन्दुओं पर बालक से चर्चा करते है।

ix. 100 प्रतिशत अभिभावकों के अनुसार वे पी टी एम में विधालय के शैक्षिक व भौतिक मुद्दों पर चर्चा करते है।

x. मात्र 15 प्रतिशत अभिभावक ही मानते है कि वे पी टी एम के अलावा अन्य दिनों में भी जानकारी लेने विधालय में जाते है।

शोध निष्कर्ष–

i. सभी विद्यालयों में पीटीएम का आयोजन किया जाता है।

ii. सभी अभिभावकों को पीटीएम में भाग लेने हेतु सुचित किया जाता है।

iii. सभी विद्यालयों में आयोजित पीटीएम की कार्यवाही का रजिस्टर में नियमित रूप से संधारण किया जाता है।

iv. सभी संस्था प्रधान पीटीएम में उपस्थित अभिभावकों को इसके महत्व का उद्बोधन करते है।

v. सभी विद्यालयों में पीटीएम के दौरान बालकों के अभिभावकों को उनके शैक्षिक स्तर की जानकारी दी जाती है।

vi. सभी विद्यालयों में पीटीएम में उपस्थित अभिभावकों को बालकों की रूचि, उपलब्धियों और कमियों के बारे में बताया जाता है।

vii. पीटीएम में सभी बालकों के अभिभावक भाग नही लेते है।

viii. सभी विद्यालयों में अभिभावकों से विद्यालय के शैक्षिक व भौतिक विकास हेतु चर्चा की जाती है।

ix. अधिकांश अभिभावकों के पास पीटीएम में भाग लेने हेतु पर्याप्त समय नही है।

x. अधिकांश अभिभावकों द्वारा पीटीएम में अनुपस्थित रहने वाले अभिभावकों को स्मरण पत्र नहीं भिजवाय जाता है।

xi. अधिकांश अभिभावक पीटीएम के बाद इसमें हुई बातों की घर पर बालकों से चर्चा नही करते है।

xii. अधिकांश विद्यालयों में पीटीएम के आयोजनों से विद्यालयों के शैक्षिक व भौतिक वातावरण में सुधार हुआ है।

सुझाव–

i. ग्रामीण क्षेत्र में पीटीएम को प्रभावी बनाने हेतु अभिभावकों को अधिकाधिक जागरूक किया जावे।

ii. अभिभावकों से व्यक्तिगत तौर पर सम्पर्क कर उन्हे पीटीएम का महत्व बताकर उसमें अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करने हेतु समझाया जावें। जिससे सभी अभिभावक पीटीएम में उपस्थित होकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर विद्यालय विकास में अपना योगदान दे सकें।

iii. राजकीय विद्यालयों को निजी शिक्षण संस्थाओं के प्रतिस्पर्धी बनाया जाऐ जिनमें समस्त भौतिक संसाधन एवं खेल मैदान उपलब्ध करवाये जावें।

iv. बालकों को गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध करायी जावें।

v. अध्यापकों को गैर शैक्षणिक कार्यो से मुक्त रखा जावें।

vi. अभिभावकों को पीटीएम में उपस्थित होने के लिए पर्याप्त समय देने हेतु पीटीएम को 'अमावस्या' के दिन आयोजित करायी जानी चाहिए।

vii. पीटीएम में उपस्थित अभिभावकों हेतु अल्पाहार एवं मानदेय देय होना चाहिए।

viii. अभिभावकों को अध्यापकों और एसडीएमसी सदस्यों द्वारा पूर्व में प्रेरित किया जाना चाहिए।

ix. पीटीएम को रचनात्मक, सांस्कृतिक आयोजनों से जोड़ना चाहिए तथा इस अवसर पर वृक्षारोपण, प्रतिभा सम्मान एवं शाला स्वच्छता आदि आयोजन किये जा सकते है।

x. जागरूक अभिभावकों को मोहल्ला/वार्डवार अन्य अभिभावकों को भी पीटीएम में भाग लेने हेतु जिम्मेदारी दी जाये।

xi. पीटीएम आयोजन का समय अधिकतम 2 से 3 घंटे निर्धारित हो।

शोध की उपादेयता–

यह शोध पीटीएम में अभिभावकों की उदासीनता पर आधारित है। यह शोध दर्शाता है कि पीटीएम के आयोजन हेतु विद्यालय परिवार समर्पित है किन्तु अभिभावकों में जागरूकता की कमी के कारण यह उतनी सफल नही हो पर रही है जितनी होनी चाहिए।

आशा है कि शोध से प्राप्त निष्कर्षो के मध्यनजर सुझाव को अमल में लाकर पीटीएम में अभिभावकों की उपस्थिति में गुणोत्तर वृद्धि की जा सकेगी जिससे यह महत्वपूर्ण कार्य संपादित हो सके।

उच्च अधिकारियों द्वारा संबलन प्रदान करने में नवाचार की आवश्यकता है।

प्रभाग स्तरीय शोध ific प्रभाग

शोधार्थीः– निर्देशन

1. श्रीमती चन्द्रकला खिचड़ ific प्रभाग डाईट, चुरु

प्रभारी आई. एफ. आई. सी. डाईट चूरु

2. श्री जगवीर सिह पूनियां अ. रा. उ. वि. मघाऊ

3. संत कुमार दहिया प्रभागाध्यक्ष

4. अमित कुमार ढ़ाका व. व्या. ific

शीर्षकः–

" बहुमाध्यम उपागम का विधार्थियों के व्यक्तित्व एंव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन "

शोध की प्रस्तावनाः–

किसी भी देश की आर्थिक समृद्धि में विज्ञान और तकनीक का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह तथ्य वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में स्पष्टः दृष्टिगोचर हो रहा है नई पीढ़ी अपनी खोज प्रवृति के कारण पूर्ण ज्ञान के आधार पर नित नये आविष्कारों को जन्म दे रही है। इन आविष्कारों की श्रंखला में " कक्षा शिक्षण अध्ययन– अध्यापन में बहुमाध्यम उपागम " के प्रयोग काा अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान परिदृश्य में इसने शिक्षा के परिक्षेत्र को प्रभावित किया है तथा यह शिक्षा एवं मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है।

बहुमाध्यम उपागम में बहुमाध्यम शब्द एक से अधिक माध्यम की ओर संकेत करता है। इस उपागम में एक से अधिक तकनिकों और साधनों का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यवस्तु को छात्रों तक पहुंचाने के लिए शिक्षक के द्वारा अनेक माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। जैसें व्याखान , ओ. एच. पी. टेपरिकार्डर, स्लाइड , मॉड्यूल , टी. वी, कम्प्यूटर, फिल्म , रेडियो, सेमीनार , कार्यशाला , विभिन्न विधियॉ , प्रणालियों इत्यादि ।

शोध के उद्देश्यः–

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नानुसार है।

1. बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता की जानकारी प्राप्त करना

2. बहुमाध्यम उपागम का विधार्थियों के व्यक्तित्व प्रभाव का अध्ययन करना

3. बहुमाध्यम उपागम का विधार्थियों की शैक्षिक उपनब्धि प्रभाव का अध्ययन करना ।

शोध परिकबहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता की जानकारी प्राप्त करना

2. बहुमाध्यम उपागम का विधार्थियों के व्यक्तित्व प्रभाव का अध्ययन करना

3. बहुमाध्यम उपागम का विधार्थियों की शैक्षिक उपनब्धि प्रभाव का अध्ययन करना ।

शोध परिकल्पनाएंः–

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएं है।

1. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी जायेगी।

2. परंपरागत विधि से शिक्षण पश्चात एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जायेगा।

3. पंरपरागत विधि सें शिक्षण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विधार्थियों के व्यक्तित्व में अंतर पाया जायेगा।

परिसीमनः–

यह शोध चूरु जिले की उच्च माध्यमिक विधालयों के विधार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रियाः–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक अनुंसंधाान विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्शः–

प्रस्तुत शोध हेतु चुरु जिले के 8 विधालयों में कक्षा 9,10,11,12 के 100 विधार्थियों न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया तथा उन्हें निम्न दो समूहों में बांटा गया–

1. प्रयोगात्मक समूह– 50 विधार्थी बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण के लिए।

2. नियंत्रित समूह– 50 विधार्थी परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण के लिए।

उपकरणः–

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्रों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित एवं मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1. शैक्षिक –उपलब्धि परीक्षण :– प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण शोधार्थी नें स्वनिर्मित वस्तूनिष्ठ शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया।

2. व्यक्तित्व मापनी परीक्षण–

विधाथियों के व्यक्तित्व मापन हेतु डा. अरुण कुमार सिंह द्वारा differential personality inventry Hindiverson का प्रयोग किया गया।

चरः–

प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है।

1. स्वतंत्र चर – बहुमाध्यम उपागम तथा परम्परागत विधि

2. आश्रित चर – व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि

सांख्यिकीय विश्लेषणः–

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता की गणना की गयी।

परिकल्पना – 01

" शिक्षण पक्रिया में बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी जायेगी। "

उक्त परिकल्पना की पूर्ति हेतु शिक्षकों का अभिमत जानने के लिए प्रश्नावली भरवाकर तथा विश्लेषण कर व्याख्या की गयी। प्राप्त अभिमत को सारणी में प्रतिशत में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक – 01

क्र. सं.	अभिमत	प्रतिशत में उतर yes/ no

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिकांश शिक्षक बहुमाध्यम उपागम देने हेतु सहमत है , व इसे रोचक व प्रभावपूर्ण उपागम मानते है।

परिकल्पना क्रमांक – 2

" परंपरागत विधि सें शिक्षण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जायेगा। "

सारणी क्रमांक – 02

विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण की व्याख्या एवं विश्लेषण

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	df	t मान की सार्थकता
परंपरागत शिक्षण समूह	100	16.3	4.955	3.329	9.8	1.98तथा 2.63 मान से अधिक अतः सार्थिक अंतर है।
बहुमाध्यम उपागम आधारित समूह	100	19.4	4.35			

परंपरागत एवं बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विधार्थियों की शैक्षिक – उपलब्धि के लिए c .r . मान 3.329 प्राप्त हुआ जो 98df तथा मान 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान 1.98 से अधिक है। अतः दोनों समूहों के माध्यमान में सार्थिक अंतर है। इस आधार पर परिकल्पना क्रमांक –02 स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण समूह के विधार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 03

" परंपरागत विधि सें शिक्षिण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विधार्थियों के व्यक्तित्व में अंतर पाया जायेगा। "

सारणी क्रमांक –03

विधार्थियों के व्यक्तिगत परिक्षण की व्याख्या एवं विश्लेषण

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	df	t मान की सार्थकता
परंपरागत शिक्षण समूह	100	83.9	5.003	3.486	98	0.05 तथा 0.01
बहुमाध्यम उपागम आधारित समूह	100	88.0	6.65			विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।

परंपरागत एवम् बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विधार्थियों के व्यक्तिव हेतु c.r. मान 3.486 प्राप्त हुआ यह मान 98df तथा 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान 1.98 अधिक है। अतः दोनां समूहों के माध्यमान में सार्थक अंतर है। अतः इस आधार पर परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण समूह के विधार्थियों एवं परंपरागत शिक्षण समूह के विधार्थियों के व्यक्तित्व में अंतर पाया गया।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध के प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है –

1. शिक्षकों की द्रष्टि से शिक्षण प्रक्रिया में बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्ता पायी गई।

2. परंपरागत एवं बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण विधार्थियों की उपलिब्ध अधिक पायी गयी। बहुआयाम उपागम से कक्षा शिक्षण प्रभावशाली होता है। छात्र निष्क्रिय रहते है। व रुचि नहीं लेते है।

3. परंपरागत एवं बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विधार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया गया । बहुमाध्यम उपागम शिक्षण का प्रयोगात्मक समूह के विधार्थियों के व्यक्तिव पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया।

सुझाव –शोध निष्कषों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं।

1. शिक्षण में बहुमाध्यम उपागम (नवाचार साधन, तकनीक) का प्रयोग एक सशक्त साधन है। इससे विधार्थियों, बालकों, शिक्षकों व जन सामान्य को भी परिचित कराना आवश्यक है।

2. राजकीय शिक्षकों निर्देशित करें कि आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, नवीन तकनीकी कौशलों का प्रयोग करते हुए छात्रों को ऐसी शिक्षा प्रदान करें, जिससें विधार्थियों के उपलब्धि स्तर में वृद्धि के साथ – साथ उनके व्यक्तित्व का भी विकास हों।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) चूरू

डर्फ स्तरीय शोध 2021–22 अध्यापक अभिमत हेतु प्रश्नावली

''बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

विद्यालय का नाम.....

अध्यापक का नाम.....

निर्देश :– 1. पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे। 2. आपकी सभी बातें गोपनीय रखी जाएगी। 3. प्रश्नो के सामने हाँ या नही में उत्तर दे।

प्रश्न 1.	आपको बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण की जानकारी है ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 2.	परंपरागत शिक्षण की अपेक्षा बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण करना अधिक आसान है।	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 3.	शिक्षक को बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण करने में अधिक मेहनत एवं स्व–अध्ययन की आवश्यकता होती है ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 4.	बहुमाध्यम उपागम का प्रयोग करने वाले शिक्षकों को तकनीकी विषयक ज्ञान होना आवश्यक है ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 5.	परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम पर आधारित शिक्षण से शाला में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ेगी ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 6.	परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम पर आधारित शिक्षण से शाला में विद्यार्थी पूरे समय तक रुकेंगे ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 7.	परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण करने से विद्यार्थियों की अध्ययन रूचि को बढ़ाया जा सकेगा ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 8.	आप इस बात से सहमत हैं कि बालकों जो शिक्षा दी जाए वह रोचक एवं प्रभावपूर्ण होनी चाहिए ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 9.	परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग से शिक्षक और छात्रों के आपसी संबंधों में सुधार होगा और छात्रों की झिझक कम होगी ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 10.	बहुमाध्यम उपागम के उपयोग से विद्यार्थियों में परस्पर निर्भरता एवं सहयोग की भावना का विकास हो सकेगा ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 11.	वर्तमान विज्ञान एवं तकनीकी के युग में भी परंपरागत शिक्षण प्रदान किया जाना आपकी दृष्टि में उचित है ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 12.	शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक होना चाहिए ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 13.	परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग से छात्रों के व्यक्तित्व विकास एवं शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जाता है ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 14.	राजकीय विद्यालयों एवं निजी शिक्षण संस्थानों में नवीन तकनीक (बहु उपागम) आधारित शिक्षण में अन्तर पाया जाता है ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 15.	विद्यार्थी किताबी ज्ञान एवं व्याख्यान पर आधारित शिक्षण की अपेक्षा ''करके सीखने'' से अधिक आसानी से एवं जल्दी सीखते हैं ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 16.	बहुमाध्यम उपागम उपयोग से छात्रों में स्वाध्याय की आदत को बढ़ाया जा सकेगा ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 17.	बहुमाध्यम उपागम का प्रयोग समय , श्रम एवं धन का अपव्यय मात्र है ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 18.	परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग से कक्षा का	सहमत/असहमत/तटस्थ

	वातावरण प्रभावी होगा तथा बालक कक्षा में अधिक सक्रिय रहेगा ?	
प्रश्न 19.	आप अपने विद्यालय में बहु उपागम पर आधारित शिक्षण दिये जाने के पक्ष में हैं ?	सहमत/असहमत/तटस्थ
प्रश्न 20.	बहुमाध्यम उपागम के उपयोग से छात्रों में आत्मविश्वास एवं कर्मठता की भावना का विकास हो सकेगा ?	सहमत/असहमत/तटस्थ

अध्यापक हस्ताक्षर **शोधार्थी हस्ताक्षर**

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

प्रभागस्तरीय शोध आईएफआईसी प्रभाग

शोधकर्त्ता– 1 श्री गोविन्दसिंह राठौड़

प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

2 श्रीमती अंजना चौधरी

अध्यापक, रा.बा.उ.प्रा.विद्यालय, घण्टेल, चूरू

शोध का शीर्षक–

प्राथमिक शिक्षा में नव प्रवेशित छात्र/छात्राओं में अपेक्षित क्षमताओं के विकास में आने वाली समस्याओं का अध्ययन।

1 पृष्ठभूमि–

बच्चे के जीवन के आठ वर्ष निर्माणात्मक होते है। जिन्हें मस्तिष्क की बुद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था के वर्षो में सार्थक संज्ञानात्मक भाषायी सामाजिक और गत्यात्मक क्षमताओं के विकास में कुछ–कुछ विशिष्ट अवधियॉ योगदान देती है। इस अवस्था में बच्चे अपने चारों ओर संसार के लोगों, उसके रंगों, आकृतियों, ध्वनियों, आकारों और रूपों के प्रति मुग्ध एवं जिज्ञासु होते हैं। 3 से 6 वर्ष तक के बच्चे पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आते हैं जिसका दूसरा नाम प्री नर्सरी, आंगनबाड़ी, मॉन्टेसरी स्कूल, किण्डरगार्डन आदि नामों से जाना जाता है। बच्चा जब पहली कक्षा में आता है इनमें से गुजरकर आता है जो प्रथम कक्षा में प्रवेश के पहले बच्चे का रूझान पढ़ाई लिखाई के लिए होना माना जाता है। इसी उद्देश्य से भारत में आंगनबाड़ी केन्द्रों की स्थापना की गई ताकि बच्चे का विद्यालय के प्रति एक सहज रिश्ता बन जाता है। वहॉ छोटे–छोटे बच्चों को पूरी आजादी होती है। बच्चों को मना नहीं किया जाता है। बच्चों में कुपोषण की समस्या से भी निपटा जा सके।

वर्तमान में महामारी के कारण आंगनबाड़ी, सरकारी विद्यालय, निजी शिक्षण संस्थान काफी समय से बंद थे। विद्यालयों में शिक्षण कार्य पूरी तरह से बंद था। ऐसे मे 3 से 6 आयु वर्ग के बच्चे आंगनबाड़ी केन्द्रों पर नही जा रहे है। समूह ग्रुप से भी अलग है। आपस में छात्र संवाद भी कहीं से नहीं हो पा रहा है। बच्चे पूरे दिन घर पर रहकर अभिभावकों की बात भी नहीं मान रहे हैं। व्यवहार से भी चिड़चिड़े, जिद्दीपन जैसे परिवर्तन भी दिखाई देने लगे हैं। पूरे दिन घर के वातावरण में अपने आपको अलग–थलग महसूस करने लगे है। ऐसे में हमारे सामने यह प्रश्न

उठता है कि बच्चे जब विद्यालय आयेंगे तो हमारे सामने स्थिति बिल्कुल पहले की अपेक्षा और ज्यादा विपरीत होगी। हमे कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। चाहे वो व्यवहार से संबंधित हो। कुपोषण से संबंधित हो सकती है। नेतृत्व क्षमता की कमी, बच्चों की रूचि–अभिरूचि से संबंधित,समूह ग्रुप संवाद की क्षमता की कमी, परिवेशीय वातावरण, कक्षा के अनुरूप दक्षता सुनिश्चित कर पाने के लक्ष्य विकसित निर्माण कैसे किये जायें। इसके लिए हमें क्या–क्या तैयारी करनी होगी इसका चार्ट हमारे मस्तिष्क में बनाना होगा। इसके लिए शिक्षक, अभिभावक, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता सभी के सहयोग पूर्ण मनोयोग से कार्य करने की आवश्यकता है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोध के इस विषय का चयन किया गया है।

2 आवश्यकता एवं औचित्य–

वर्तमान में शिक्षण संस्थान, आंगनबाड़ी केन्द्र, सरकारी व निजी विद्यालय काफी समय से बंद पड़े हैं। बच्चे इस दौर में घर पर ही हैं। कहीं गये नहीं हैं। समूह ग्रुप से भी अलग है। आस–पड़ौस के वातावरण से भी उनका कम्न्युकेशन नहीं हो रहा है। आपसी संवाद से भी वंचित है। उनके व्यवहार में भी काफी बदलाव आया है।

अभिभावकों की बातों पर भी ज्यादा ध्यान नहीं देना तथा अधिकतर समय मोबाईल पर लगे रहना आदि। इस प्रकार बच्चों के स्वभाव में भी काफी बदलाव आ गये है।

बच्चों में गणितीय अवधारणाएँ और शब्द सामर्थ्य सीखने की गतिविधियों का अभाव भी प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देगा। बच्चों की वर्तमान की जो स्थिति है वह शिक्षक के लिए एक बड़ी चुनौती है। ऐसी स्थिति में शिक्षा व्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता है। शिक्षा की समस्याओं को व्यापक परिप्रेक्ष्य में रखने, देखने और इसी दायरे में समाधान खोजने की जरूरत है। इसके लिए शाला प्रमुख, शिक्षक, अभिभावक, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ता सभी का आपसी सहयोगपूर्ण सामंजस्य होना जरूरी है। ताकि बच्चों का विद्यालय के प्रति पूर्व की भांति जुड़ाव फिर से पैदा किया जा सके। बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बनें, बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह या पुर्नबलन मिले। वार्तालाप कौशल की नींव मजबूत हो सकें। विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा हो सके। अपने आस–पास के परिवेश से जुड़ने की प्रवृति का विकसित हो सके।

शोध के उद्देश्य–

1. प्राथमिक शिक्षा प्रवेश पूर्व छात्र/छात्राओं की अपेक्षित क्षमताओं का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक शिक्षा प्रवेश पूर्व छात्र/छात्राओं के अपेक्षित विकास में आने वाली वर्तमान स्थिति में बाधाओं का अध्ययन।
3. प्राथमिक शिक्षा प्रवेश पूर्व छात्र/छात्राओं अपेक्षित क्षमता विकास हेतु अभिभावक की संभावित भूमिका परिवर्तन की स्थिति में विद्यालय प्रयासों की संभावनाओं का अध्ययन।

शोध परिकल्पना–

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएं है।

1. प्राथमिक शिक्षा प्रवेश पूर्व छात्र/छात्राओं की अपेक्षित क्षमताओं में अन्तर पाया जायेगा।
2. प्राथमिक शिक्षा प्रवेश पूर्व छात्र/छात्राओं में अपेक्षित विकास में अन्तर पाया जायेगा।
3. प्राथमिक शिक्षा प्रवेश पूर्व छात्र/छात्राओं के अभिभावकों में अभिप्रेरणा स्तर अलग–अलग होगी।

शोध परिसीमन–

प्रस्तुत शोध चूरू जिले के 06 राजकीय विद्यालयों के अध्यापक, छात्र, अभिभावकों तक परिसीमित है।

शोध विधि–

सर्वेक्षण एवं अवलोकनात्मक।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध में चूरू जिले के 06 रा.उ.मा./रा.उ.प्रा. विद्यालयों के 14 शिक्षकों, 14 अभिभावकों तथा 60 छात्रों का न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया है जो निम्न प्रकार से है–

क्र.स.	विद्यालय का नाम	ब्लॉक का नाम	शिक्षक संख्या	अभिभावक संख्या	छात्र संख्या
1	रा. उ. प्रा. वि. हरियासर जाटान	सरदारशहर	3	3	10
2	रा. उ. प्रा. वि. मधाऊ	राजगढ़	3	3	10
3	रा. उ. मा. वि. खुड़डी	सुजानगढ़	2	2	10
4	रा. उ. प्रा. वि. बांगड़वा		2	2	10
5	रा. उ. मा वि. ढाणी डी. एस. पुरा	चूरू	2	2	10
6	रा. पी. के. बा. बा. उ. प्रा. वि.	चूरू	2	2	10
		कुल योग =	14	14	60

शोध उपकरण :–

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदतों के संकलनों के लिए शोध कर्ता द्वारा स्वयं निर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

1. शिक्षक प्रश्नावली
2. अभिभावक प्रश्नावली
3. छात्र प्रश्नावली

दत संकलन :–

न्यादर्श में शामिल चूरू जिले के 06 विद्यालयों में शिक्षकों ,अभिभावकों तथा छात्रों के द्वारा प्रश्नावली के द्वारा दिये गये हॉ /नहीं के रूप में मतों का संकलन किया गया है जो विश्लेषण तालिका 1, 2 व 3 में संकलित हैं।

प्रश्न संख्या	प्राप्त मत हॉ	प्राप्त मत नहीं	प्राप्त मत प्रतिशत हॉ	प्राप्त मत प्रतिशत नहीं	वि. वि.
1	14	–	100	–	
2	14	–	100	–	

3	14	—	100	—	
4	14	—	100	—	
5	14	—	100	—	
6	13	01	92.85	7.14	
7	14	—	100	—	
8	13	01	92.85	7.14	
9	08	06	57.14	42.85	
10	13	01	92.85	7.14	
11	14	—	100	—	

शिक्षक अभिमत :–

प्रस्तुत अवलोकनी से ज्ञात होता है कि 100 प्रतिशत शिक्षक कक्षा में प्रत्येक बच्चे को पहचानते हैं। 100 प्रतिशत शिक्षक कक्षा में आने वाले प्रत्येक बच्चे का नाम जानते है। 100 प्रतिशत शिक्षक कक्षा में प्रत्येक बच्चे से उनकी समस्याओं को सुनते है। 100 प्रतिशत शिक्षक बच्चों को खेलों के माध्यम से सिखाते है। 100 प्रतिशत शिक्षक बच्चों को पढने के लिए प्ररित करते हैं।

92.85 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि उनके द्वारा पढाया जाने पर बच्चे सुनने में रूचि लेते है। 100 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि उनकी कक्षा में बच्चे खुशनुमा रहते है। 92.85 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि जब वो पढाते है तो बच्चे प्रश्न पुछते हैं। 57.14 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि उनके द्वारा कक्षा में प्रश्न पूछे जाने पर बच्चे उतर देते हैं। 92.85 प्रतिशत शिक्षकों का मानना है कि बच्चे उनके द्वारा दीये गये गृहकार्य को करते है। 100 प्रतिशत शिक्षक मानते है कि उनके द्वारा कक्षा में गतिविधि कराए जाने पर बच्चे अधिक रूचि लेते हैं।

विश्लेषण तालिका –2 (अभिभावक मत)

प्रश्न संख्या	प्राप्त मत हॉ	प्राप्त मत नहीं	प्राप्त मत प्रतिशत हॉ	प्राप्त मत प्रतिशत नहीं	वि. वि.
1	14	—	100	—	
2	12	02	85.71	14.28	
3	14	—	100	—	
4	14	—	100	—	
5	12	02	85.71	14.28	
6	13	01	92.85	7.14	
7	12	02	85.71	14.28	
8	14	—	100	—	

प्रस्तुत अवलोकन से ज्ञात होता है कि 100 प्रतिशत अभिभावक अपने बच्चों को समय पर भोजन करवाते है। 85. 71 प्रतिशत अभिभावक इस बात का ध्यान रखते हैं कि उनके बच्चे की मित्र – मण्डली उसके लिए उचित है। 100 प्रतिशत अभिभावक यह मानते हैं कि शिक्षण के दौरान

उनका बच्चा रूचि लेकर पढता है। 100 प्रतिशत अभिभावक यह मानते हैं कि उनका बच्चा विद्यालय की सभी बातों को लेकर उनके साथ चर्चा करता है। 85. 71 प्रतिशत अभिभावक यह मानते हैं कि जब बालक कोई रचनात्मक कार्य कारता है तो वे उसको प्रोत्साहित करते हैं।

92.85 प्रतिशत अभिभावक यह मानते हैं कि उनका बच्चा उनसे कई प्रश्न व सवाल पूछता है। 85.71 प्रतिशत अभिभावक यह मानते हैं कि वे अपने बच्चे को कविता , बालगीत आदि सीखाते हैं तो वह रूचिपूर्वक दोहरान करता है। 100 प्रतिशत अभिभावक यह मानते हैं कि जब उनका बच्चा विद्यालय में जाता है तो वे उसको कोविड –19 की गाइडलाईन के बारे में समझाते हैं।

विश्लेषण तालिका – 3 (छात्र मत)

प्रश्न संख्या	प्राप्त मत हॉ	प्राप्त मत नहीं	प्राप्त मत प्रतिशत हॉ	प्राप्त मत प्रतिशत नहीं	वि.वि.
1	60	–	100	–	
2	56	04	93.33	6.66	
3	59	01	98.33	1.66	
4	60	–	100	–	
5	60	–	100	–	
6	56	04	93.33	6.66	
7	58	02	96.66	3.33	
8	49	11	81.66	18.33	
9	60	–	100	–	
10	55	05	91.66	8.33	

100 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि उनको विद्यालय में आना अच्छा लगता है। 93.33 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि उनको विद्यालय में खेलना अच्छा लगता है। 98.33 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि उनको विद्यालय में आकर पढना लिखना अच्छा लगता है। 100 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि व विद्यालय में आकर अध्यापकों को प्रणाम करते है। 100 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि व विद्यालय में स्नान करके आते है। 93.33 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि वे विद्यालय में धुले हुए कपड़े पहन कर आते है। 96.66 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि उनको गृहकार्य करना अच्छा लगता है। 81.66 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि गृहकार्य करनें में उनके माता –पिता उनकी मदद करते है। 100 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि उनको कक्षा में अध्यापकों से पढना अच्छा लगता है। 91.66 प्रतिशत छात्रों का मनना है कि उनको कक्षा में पढाई के अतिरिक्त अन्य गतिविधि में भाग लेना अच्छा लगता है।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श में चयनित विद्यालयों के शिक्षकों, अभिभावकों तथा छात्रों द्वारा प्रदत मतों तथा अवलोकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि – लम्बे समय तक विद्यालय बन्द

रहने के कारण (कोविड –19) सर्वाधिक विपरित प्रभाव प्राथमिक शिक्षा के बच्चों पर पड़ा है बालक की निर्माण अवस्था बाल्यावस्था होती है इस अवस्था में बच्चों को जैसा वातावरण मिलता है वे उसी सकेक अनुरूप ढल जाते है। विद्यालय बन्द रहने के कारण बच्चों ने अपना समय अन्य कार्यों जैसे टी. वी., मोबाईल आदि में व्यस्त रहकर बिताया। कोविड – 19 के कारण बच्चे आपस में मिल –जुल नहीं सके तथा आपस में खेलकुद नहीं सके । इस कारण बच्चों में कुछ आवगुण पैदा हो गये जैसे चिड़चिड़ापन ,जिदि्पन, झूठबोलना, विद्यालय आने का मन न करना, माता – पिता की बातों पर ध्यान न देना, पढाई से दूर भागना आदि। इन सबके कारण यह आवश्यक हो गया है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कुछ सुधार किया जाये ताकि ऐसे समय में बच्चों का कोई भी मानसिक तथा शैक्षिक नुकसान ना हो।

सुझाव :–

शोधकर्ता का सुझाव है कि ऐसे समय में अभिभावकों तथा शिक्षकों को बच्चों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि वे अनुपयोगी कार्यों में अपना समय बर्बाद न करें। तथा सरकार को भी चाहिए कि वे इस तरफ अपना ध्यान दें और वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समय के अनुसार कुछ बदलाव किये जाएँ।

परिशिष्ठः–

1. शिक्षक प्रश्नावली
2. अभिभावक प्रश्नावली
3. छात्र प्रश्नावली।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

शोध शीर्षकः– प्राथमिक शिक्षा में नव प्रवेशित पूर्व छात्र/छात्राओं में अपेक्षित क्षमताओं के विकास में आने वाली समस्याओं

का अध्ययन।

विद्यालय का नाम.....

शिक्षक का नाम.....

निर्देशः–

1 पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे।
2 आपकी सभी बातें गोपनीय रखी जाएगी।
3 मतों के सामने उत्तर दे।

शिक्षक प्रश्नावली

1 क्या आप कक्षा में प्रत्येक बच्चे को पहचानते है। हॉ/नही

2 क्या आप कक्षा में आने वाले प्रत्येक बच्चे का नाम जानते है। हॉ/नही

3 क्या आप व्यक्तिगत रूप से कक्षा में प्रत्येक बच्चे से उनकी समस्याओं को सुनते है। हॉ/नही

4 क्या आप बच्चों को खेलों के माध्यम से सीखाते हो। हॉ/नही

5 क्या आप बच्चों को पढने के लिए प्रेरित करते हो। हॉ/नही

6 क्या बच्चे कक्षा में आपके द्वारा पढाया जाने पर सुनने में रूचि रखते है। हॉ/नही

7 क्या आपकी कक्षा में बच्चे खुशनुमा रहते है। हॉ/नही

8 क्या कक्षा में बच्चे आपके पढाते समय प्रश्न पुछते है। हॉ/नही

9 क्या सभी बच्चे आपके द्वारा कक्षा में प्रश्न पुछने पर उत्तर देते है। हॉ/नही

10 क्या बच्चे आपके द्वारा दिये गये गृहकार्य को करते है। हॉ/नही

11 क्या आप कक्षा में गतिविधि कराते हो तो बच्चे रूचि लेते है। हॉ/नही

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

शोध शीर्षकः– प्राथमिक शिक्षा नव प्रवेशित छात्र/छात्राओं में अपेक्षित क्षमताओं के विकास में आने वाली समस्याओं का अध्ययन।

विद्यालय का नाम.....

अभिभावक का नाम.....

निर्देशः–

1 पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे।
2 आपकी सभी बातें गोपनीय रखी जाएगी।
3 मतों के सामने उत्तर दे।

अभिभावक प्रश्नावली

1 क्या आप अपने बच्चे को समय पर भोजन करवाते है। हॉ/नही

2 आप इस बात का ध्यान रखते है कि आपके बच्चे की मित्रमण्डली उसके लिए उचित है। हॉ/नही

3 शिक्षण के दौरान आपका बच्चा रूचि लेकर अध्यापन करता है। हॉ/नही

4 विद्यालय की सभी बातों को आपके साथ वह चर्चा करता है। हॉ/नही

5 जब बालक कोई रचनात्मक कार्य करता है तो आप उसको प्रोत्साहित करते है। हॉ/नही

6 आपका बच्चा आपको कई प्रकार के प्रश्न व सवाल पुछता है। हॉ/नही

7 आप अपने बच्चे को कविता ,बालगीत सीखाते है तो वह रूचिपूर्वक दोहरान करता है। हॉ/नही

8 जब आपका बच्चा विद्यालय में जाता है तो आप उसको कोविड–19 की गाइडलाईन के बारे में समझाते है। हॉ/नही

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

शोध शीर्षकः– प्राथमिक शिक्षा नव प्रवेशित छात्र/छात्राओं में अपेक्षित क्षमताओं के विकास में आने वाली समस्याओं का अध्ययन।

विद्यालय का नाम.....

विधार्थी का नाम.....

निर्देशः–

1 पूछे गए प्रश्नों का उत्तर आत्मविश्वास से दे।
2 आपकी सभी बातें गोपनीय रखी जाएगी।
3 मतों के सामने उत्तर दे।

छात्र प्रश्नावली

1 क्या आपको स्कूल में आना अच्छा लगता है। हॉ/नही

2 क्या स्कूल में आकर आपको खेलना अच्छा लगता है। हॉ/नही

3 क्या स्कूल में आकर आपको पढना–लिखना अच्छा लगता है। हॉ/नही

4 क्या आप स्कूल में आकर अध्यापकों को प्रणाम करते है। हॉ/नही

5 क्या आप स्कूल में स्नान करके आते है। हॉ/नही

6 क्या आप स्कूल में धूले हुए कपड़े पहन के आते हों। हॉ/नही

7 क्या आपको गृहकार्य करना अच्छा लगता है। हॉ/नही

8 क्या आपको अपना गृह कार्य करने में आपके माता –पिता मदद करते है। हॉ/नही

9 क्या आपको कक्षा में अध्यापकों से पढ़ना अच्छा लगता है। हॉ/नही

10 क्या आपको कक्षा में पढाई के अतिरिक्त अन्य गतिविधि में भाग लेना अच्छा लगता है। हॉ/नही

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

डर्फ स्तरीय शोध

सत्र–2021–22

शोध शीर्षक– विज्ञान विषय के शिक्षण में शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन।

शोधकर्त्ता–

1. श्री सन्त कुमार दहिया
प्रभागाध्यक्ष,आई.एफ.आई.सी
डाइट,चूरू।

2. श्रीमती अंजना दईया
अध्यापक, रा.उ.प्रा.विद्यालय,
बास घंटेल, चूरू।

1. शोध शीर्षक–

विज्ञान विषय के शिक्षण में शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन।

2. प्रस्तावना–

अध्यापक का मुख्य उद्देश्य पाठयक्रम को छात्रों तक पहुंचाने का होता है। अध्यापक शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करते हुए पाठयक्रम को इस प्रकार प्रस्तुत करता है, ताकि पाठयवस्तु को छात्र अपने मस्तिष्क में धारण कर सके। शिक्षण का अर्थ शिक्षण के उन उपकरणों से है जिनका कक्षा में प्रयोग करने से छात्रों को देखने तथा सुनने वाली इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

डेन्ड के अनुसार– ''सहायक सामग्री वह सामग्री है जो कक्षा में या अन्य शिक्षण परिस्थितियों में लिखित या बोली गई पाठय सामग्री को समझने में सहायता प्रदान करती है।''

कार्टर गुड के अनुसार–''कोई भी ऐसी सामग्री जिसके माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को उद्दीप्त किया जा सके अथवा श्रवणेन्द्रिय संवेदनाओं के द्वारा आगे बढाया जा सके व सहायक सामग्री कहलाती है।''

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि शिक्षण अधिगम वह सामग्री, उपकरण तथा युक्तियां हैं जिनके प्रयोग करने से विभिन्न शिक्षण परिस्थितियों में छात्रों और समूहों के मध्य प्रभावशाली ढंग से ज्ञान का संचार होता है। सहायक सामग्री का दृश्य–श्रवय सामग्री के मनोवैज्ञानिक आधार से छात्र उस ज्ञान को स्थाई रूप से अपने मस्तिष्क में धारण कर सकते हैं। विज्ञान में मुख्य रूप से जिन शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग किया जाता है उनमें मुख्यतः श्यामपट्ट, चॉक, वास्तविक वस्तुएं, मॉडल्स, प्रयोग प्रदर्शन, गतिविधि करके सीखना, चित्र, चार्ट, रेखाचित्र, संग्रहालय, भ्रमण आदि।

3. शोध का औचित्य–

अध्यापन के दौरान पाठय सामग्री को समझाते समय शिक्षक जिस सामग्री का प्रयोग करता है वह शिक्षण अधिगम सामग्री कहलाती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सहायक सामग्री के संबंध में कई नवाचार हुए हैं जिनकी सहायता से विज्ञान अध्ययन को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता हैं। इन सामग्रियों के द्वारा सीखा हुआ ज्ञान न केवल छात्रों में उत्साह जागृत करता है वरन सीखे हुए ज्ञान को लम्बे समय तक अपने समृति पटल में संजोये

रख सकता है। दूसरी और शिक्षक भी अपने अध्यापन के प्रति उत्साहित रहता है। परिणामस्वरूप कक्षा का वातावरण हमेशा सकारात्मक बना रहता है।

वर्तमान समय में कोरोना के बाद विद्यालय पुनः खुलने पर छात्रों में शिक्षण के प्रति रूचि जागृत करने के लिए व बालकों को विज्ञान विषय को आसानी से सीखने व समझने के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री का अधिकाधिक उपयोग बहुत अधिक सहायक सिद्ध हो पाए इस हेतु अध्यापक और छात्र प्रेरित हो पाएं। अतः इस विषय पर शोधकर्ताओं ने शोध करने का विचार किया ।

4. शोध के उद्देश्य–

(1) छात्रों को क्रियाशील बनाकर उनके सीखने की गति में सुधार करना।

(2) कोरोना काल के बाद विद्यालय खुलने पर बालकों को विज्ञान विषय की गतिविधियों से पुनः जोड़ना।

(3) अध्यापकों को विज्ञान विषय में शिक्षण अधिगम सामग्री का अधिकाधिक उपयोग करने के बारे में सतत प्रयत्नशील होने के लिए जागरूक करना।

5. शोध की परिकल्पना–

- छात्रों के प्रायोगिक गतिविधियों में सक्रिय बने रहने और विज्ञान मेले, अनुसंधान व परियोजना में बढ़कर हिस्सा लेने में सहायक।
- कोरोना काल के बाद आये सीखने में अवरोध को कम करने में सहायक।
- अध्यापक अपने चारों तरफ के विद्यालयी परिवेश में उपलब्ध सामग्री का अधिकाधिक इस्तेमाल करने के प्रति जागरूक होना तथा विज्ञान विषय की नवीनतम तकनीकी की जानकारी के प्रति जागरूक होना।

6. शोध का न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध हेतु चूरू जिले के 4 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के 4 विज्ञान अध्यापकों व कक्षा 6, 7, 8 के 40 छात्रों को चुना गया।

क्र.स.	विद्यालय का नाम	अध्यापक	छात्र/छात्रा
1.	रा.उ.प्रा.विद्यालय, खण्डवा पट्टा–पीथीसर	1	10
2.	रा.बा.उ.प्रा.विद्यालय, बन्धनाऊ, सरदारशहर	1	10
3.	रा.उ.प्रा.विद्यालय, सांखु फोर्ट	1	10
4.	रा.उ.प्रा.विद्यालय, केरली बास	1	10

7. शोध सीमांकन–

प्रस्तुत शोध चूरू जिले के रा.उ.प्रा.विद्यालय के विज्ञान अध्यापक व कक्षा 6, 7, 8 के छात्र–छात्राओं तक सीमित रखा गया।

8. अध्ययन विधि–

चयनित विद्यालयों के अध्यापकों और छात्रों के मतों व विचारों से प्राप्त आंकड़ों के लिए सर्वेक्षण व विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया तथा प्रतिशत व औसत सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

9. शोध उपकरण–

प्रस्तुत शोध में विज्ञान अध्यापक व छात्रों हेतु स्वयं निर्मित अभिमतावली का प्रयोग किया गया। साथ में विज्ञान शिक्षण अधिगम सामग्री की उपलब्धता व प्रयोगशाला की स्थिति का अवलोकन किया गया।

10. दत्त संकलन–

न्यादर्श में चयन किये गए 4 विद्यालयों के 4 विज्ञान अध्यापकों तथा 40 छात्र/छात्राओं से हां तथा नही के रूप में अभिमतावली के दत्तों का संकलन किया गया। तथा प्रयोगशाला की स्थिति व विज्ञान शिक्षण सामग्री की स्थिति का अवलोकन किया गया।

चयनित शोध उपकरण द्वारा प्राप्त मतों व विचारों का योग व प्रतिशत विधि के द्वारा विश्लेषण किया गया है।

11. शोध दत्त विश्लेषण–

विश्लेषण तालिका–1

छात्र/छात्रा अभिमतावली

क्र. स.	कथन	प्राप्त उत्तर हां/नही		प्राप्त उत्तर प्रतिशत हां/नही	
1.	विज्ञान विषय पढ़ने व समझने में कठिन लगता हैं।	16	24	40	60
2.	विज्ञान के कठिन बिंदुओं को अगर किसी प्रयोग, मॉडल या दृश्य–श्रव्य सामग्री से समझाया जाता है तो आप उसे भली–भांति से समझा जाते हैं।	33	7	82.5	17.5
3.	विज्ञान विषय के चित्रों को बनाना व नामांकित करना आपको रूचिकर लगता है।	37	4	92.5	7.5
4.	आपके विद्यालय में विज्ञान किट व विज्ञान की प्रयोग सामग्री हैं।	28	12	70	30
5.	आपके अध्यापक आपको विज्ञान पढ़ाते समय अक्सर प्रयोग सामग्री का उपयोग करते हैं।	24	16	60	40
6.	आप अध्यापक द्वारा दिखाए गए उपयोग व पाठ्यपुस्तक के क्रियाकलाप घर पर जाकर करते हैं।	33	7	82.5	17.5
7.	आप विज्ञान के किसी पाठ या बिन्दु को समझने में अपने साथी की मदद करते हैं।	35	5	87.5	12.5
8.	विज्ञान के प्रयोग देखने व करने के बाद आप अंधविश्वासों से मुक्त हो रहे हैं।	33	7	82.5	17.5
9.	कोरोना काल में सीखने की गति में आए अवरोध को कम करने मे विज्ञान के प्रयोग व शिक्षण सहायक सामग्री से आप लाभान्वित हो रहे हैं।	28	12	70	30
10.	आप नवीनतम तकनीकी जैसे–इंटरनेट, आईसीटी, 3जी, 4जी इत्यादि के बारे में जानकारी रखते हैं।	28	12	70	30

विश्लेषण तालिका–1

विज्ञान अध्यापक अभिमतावली

क्र. स.	कथन	प्राप्त उत्तर हां/नही		प्राप्त उत्तर प्रतिशत हां/नही	
1.	शिक्षक जब चित्र, चार्ट या मॉडल के साथ कक्षा में प्रवेश करता है तब बालकों में उत्सुकता बढ़ जाती है, तथा वे अधिक सक्रिय हो जाते है।	4	0	100	0
2.	आप अधिकतर अपने विषय को रूचिकर व बोधगम्य बनाने हेतु शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करते हैं।	4	0	100	0
3.	जहां आपका मौखिक व्यक्तव्य कम प्रभावी हो जाता है वहां दृश्य सामग्री से पाठ में रोचकता उत्पन्न कर उसे बोधगम्य बनाया जा सकता है।	4	0	100	0
4.	आप छात्रों को अपने साथ प्रयोग संबंधी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं।	3	1	75	25
5.	आपको विद्यालय परिसर में ही अपनें विज्ञान शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में प्रचुर संभावनाएं व अवसर मिल जाते हैं।	4	0	100	0
6.	शिक्षण अधिगम सामग्री आप के समय ऊर्जा दोनों की बचत में सहायक होती हैं।	4	0	100	0
7.	आप के छात्र–छात्राएं गतिविधियों में सक्रिय रहते है, व छोटे–छोटे प्रयोग स्वयं करके देखते है।	3	1	75	25
8.	आप प्रयोग में क्रियाकलाप को करते समय यह ध्यान रखते हैं कि वह पाठ्यवस्तु से संबंधित है तथा बालिकों की आयु व समझ के अनुसार है।	4	0	100	0
9.	सामग्री चयन करते समय ध्यान रखते हैं कि यह छात्रों में रूचि जागृत करने वाली हो।	4	0	100	0
10.	अधिगम सामग्री के उपयोग से कोरोनाकाल के बाद विद्यार्थियों को विज्ञान अध्ययन से जोड़ने व रूचि जागृत करने में सहायता मिलती है।	4	0	100	0

12. शोध दत्त विश्लेषण व्याख्या–

तालिका–1– प्रस्तुत शोध से ज्ञात होता है कि 40 प्रतिशत को विज्ञान पढ़ने व समझने में कठिन लगता है। 82.5 प्रतिशत छात्र/छात्राएं मानते है कि विज्ञान विषय के कठिन बिन्दुओं को अगर किसी प्रयोग, मॉडल या दृश्य–श्रव्य सामग्री से समझाया जाता है तो वे भली भांति प्रकार से समझते हैं। 92.5 प्रतिशत छात्रों को विज्ञान विषय के चित्रों को बनाना व उन्हें नामांकित करना रूचिकर लगता है। 70 प्रतिशत विद्यालय में विज्ञान किट व विज्ञान प्रयोग सामग्री उपलब्ध है। 60 प्रतिशत छात्र–छात्राओं के अनुसार उनके अध्यापक विज्ञान पढ़ाते समय प्रयोग सामग्री का उपयोग करते है। 82.5 छात्र अध्यापक द्वारा दिखाए गए प्रयोग व पाठ्यपुस्तक के क्रियाकलाप घर जाकर करते है। 87.5 छात्र विज्ञान के किसी पाठ को समझने में अपने साथी की मदद करते हैं। 82.5 छात्र मानते हैं कि विज्ञान के प्रयोग देखने व करने के बाद वो अंधविश्वासों से मुक्त हो रहे हैं। 70 प्रतिशत छात्रों के अनुसार बाद वो अंधविश्वासों से मुक्त हो रहे हैं। 70 प्रतिशत छात्रों के अनुसार कोरोनाकाल में सीखने की गति में आए अवरोध को कम करने में विज्ञान के प्रयोग व शिक्षण सहायक सामग्री से लाभान्वित हो रहे हैं। 70 प्रतिशत छात्र नवीनतम तकनिकी जैसे– 3जी, 4जी के बारे में जानकारी रखते है।

तालिका–2 – प्रस्तुत शोध की तालिका–2 के तालिका–2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि शत–प्रतिशत अध्यापक इस बात से सहमत हैं कि वे जब कक्षा में चित्र, चार्ट या मॉडल के साथ प्रवेश करते हैं तो बालकों में उत्सुकता बंद जाती है। शत–प्रतिशत अध्यापक अपने विषय को रूचिकर व बोधगम्य बनाने हेतु शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करते हैं। 100 प्रतिशत अध्यापकों के अनुसार जहां मौखिक अभिव्यक्ति की प्रभावशीलता कम हो जाती है, वहां दृश्य सामग्री से पाठ में रोचकता उत्पन्न की जा सकती है। 75 प्रतिशत अध्यापक अपनें छात्रों के साथ प्रयोग गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। 100 प्रतिशत अध्यापक में स्वीकार करते हैं कि विद्यालय परिसर में ही विज्ञान शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में प्रचुर संभावनाएं मौजूद हैं। शत–प्रतिशत शिक्षकों का यह मानना है कि शिक्षण अधिगम सामग्री से उनके समय व ऊर्जा की बचत होती है। 75 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार उनके छात्र–छात्राएं विज्ञान गतिविधियों में सक्रिय रहते हुए छोटे–छोटे प्रयोग स्वयं करके देखते हैं 100 प्रतिशत विज्ञान अध्यापक पाठ्यवस्तु से संबंधित व बच्चों की आयु के अनुसार ही क्रियाकलाप करवाते हैं। शत–प्रतिशत अध्यापक छात्रों में रूचि जागृत करने वाली अधिगम सामग्री का चयन करते हैं। 100 प्रतिशत अध्यापकों के अनुसार

कोरोनाकाल के बाद विद्यार्थियों को विज्ञान अध्ययन से जोड़ने व रूचि जागृत करने में शिक्षण अधिगम सामग्री सहायक है।

13. शोध निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध से प्राप्त दत्तों के विश्लेषण से प्राप्त तथ्यों व मतों के अनुसार विज्ञान विषय कुछ छात्रों को पढ़ने व समझने में कठिन लगता है, परन्तु अगर विज्ञान विषय को चित्र, मॉडल या प्रयोग प्रदर्शन के द्वारा समझाया जाए तो छात्र उसे भली–भांति प्रकार से समझ जाते हैं। विज्ञान विषय में दृश्य सहायक सामग्री द्वारा पाठ में रोचकता उत्पन्न की जा सकती है। विज्ञान शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में विद्यालय परिवेश में उपलब्ध चित्र, चार्ट, फूल–पतियां, पेड़–पौधे इत्यादि को भी सहायक सामग्री के रूप में काम में लिया जा सकता है। विज्ञान विषय को समझने व उनके प्रयोगों के प्रदर्शन से छात्र अंधविश्वासों से मुक्त हो रहे हैं। विज्ञान के प्रयोग या मॉडल अगर पाठ से संबंधित, रूचिकर व बालकों की आयु के अनुसार चयन किये जाते हैं तो ये शिक्षक का समय व ऊर्जा की बचत करते है तथा बालकों के लिए अधिक बोधगम्य हो जाते हैं। वर्तमान समय में कोरोना काल में आए सीखने के अवरोध को भी विज्ञान शिक्षण सामग्री के द्वारा कम करने में सहायता मिली है। छात्र–छात्रा नवीनतम तकनिकी की जानकारी रखते हुए विज्ञान विषय में अपनी रूचि व समझ के अनुसार विज्ञान के छोटे–छोटे प्रयोग करके अधिक सीख सकते हैं।

14. सुझाव–

i. प्रत्येक विद्यालय में विज्ञान विषय की शिक्षण अधिगम सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
ii. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में प्रयोगशाला की सुविधा उपलब्ध करवानी चाहिए।
iii. विज्ञान अध्यापक को समय–समय पर प्रयोगों व नवाचारों का समुचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
iv. बालकों व शिक्षकों को स्वयं निर्मित शिक्षण सहायक सामग्री बनाने हेतु प्रेरित करना चाहिए।
v. एबीएल किट का शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में समुचित उपयोग किया जाना चाहिए।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

डर्फ स्तरीय शोध 2021–22

अध्यापक हेतु चिन्हांकन सूची

नाम अध्यापक.....योग्यता.....

विद्यालय का नाम.....

नोटः– आपके कथन व उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे।

क्र.स.	कथन	हां/नहीं
1.	शिक्षक जब चित्र, चार्ट या मॉडल के साथ कक्षा में प्रवेश करता है तब बालकों में उत्सुकता बढ़ जाती है, तथा वे अधिक सक्रिय हो जाते है।	हां/नहीं
2.	आप अधिकतर अपने विषय को रूचिकर व बोधगम्य बनाने हेतु शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करते हैं।	हां/नहीं
3.	जहां आपका मौखिक व्यक्तव्य कम प्रभावी हो जाता है वहां दृश्य सामग्री से पाठ में रोचकता उत्पन्न कर उसे बोधगम्य बनाया जा सकता है।	हां/नहीं
4.	आप छात्रों को अपने साथ प्रयोग संबंधी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं।	हां/नहीं
5.	आपको विद्यालय परिसर में ही अपनें विज्ञान शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में प्रचुर संभावनाएं व अवसर मिल जाते हैं।	हां/नहीं
6.	शिक्षण अधिगम सामग्री आप के समय ऊर्जा दोनों की बचत में सहायक होती हैं।	हां/नहीं
7.	आप के छात्र–छात्राएं गतिविधियों में सक्रिय रहते है, व छोटे–छोटे प्रयोग स्वयं करके देखते है।	हां/नहीं
8.	आप प्रयोग में क्रियाकलाप को करते समय यह ध्यान रखते हैं कि वह पाठ्यवस्तु से संबंधित है तथा बालिकों की आयु व समझ के अनुसार है।	हां/नहीं

9.	सामग्री चयन करते समय ध्यान रखते हैं कि यह छात्रों में रूचि जागृत करने वाली हो।	हां/नहीं
10.	अधिगम सामग्री के उपयोग से कोरोनाकाल के बाद विद्यार्थियों को विज्ञान अध्ययन से जोड़ने व रूचि जागृत करने में सहायता मिलती है।	हां/नहीं

हस्ताक्षर अध्यापक

हस्ताक्षर संस्था प्रधान

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

डर्फ स्तरीय शोध 2021–22

छात्र हेतु चिन्हांकन सूची

नाम छात्र/छात्रा.....कक्षा.....

विद्यालय का नाम.....

नोटः– आपके कथन व उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे।

क.स.	कथन	हां/नहीं
1.	विज्ञान विषय पढ़ने व समझने में कठिन लगता हैं।	हां/नहीं
2.	विज्ञान के कठिन बिंदुओं को अगर किसी प्रयोग, मॉडल या दृश्य–श्रव्य सामग्री से समझाया जाता है तो आप उसे भली–भांति से समझा जाते हैं।	हां/नहीं
3.	विज्ञान विषय के चित्रों को बनाना व नामांकित करना आपको रूचिकर लगता है।	हां/नहीं
4.	आपके विद्यालय में विज्ञान किट व विज्ञान की प्रयोग सामग्री हैं।	हां/नहीं
5.	आपके अध्यापक आपको विज्ञान पढ़ाते समय अक्सर प्रयोग सामग्री का उपयोग करते हैं।	हां/नहीं
6.	आप अध्यापक द्वारा दिखाए गए उपयोग व पाठ्यपुस्तक के क्रियाकलाप घर पर जाकर करते हैं।	हां/नहीं

7.	आप विज्ञान के किसी पाठ या बिन्दु को समझने में अपने साथी की मदद करते हैं।	हां/नहीं
8.	विज्ञान के प्रयोग देखने व करने के बाद आप अंधविश्वासों से मुक्त हो रहे हैं।	हां/नहीं
9.	कोरोना काल में सीखने की गति में आए अवरोध को कम करने मे विज्ञान के प्रयोग व शिक्षण सहायक सामग्री से आप लाभान्वित हो रहे हैं।	हां/नहीं
10.	आप नवीनतम तकनीकी जैसे–इंटरनेट, आईसीटी, 3जी, 4जी इत्यादि के बारे में जानकारी रखते हैं।	हां/नहीं
11.	आपने विज्ञान मे किस तरह के प्रयोग किए है, (संक्षिप्त विवरण लिखों)	

हस्ताक्षर छात्र हस्ताक्षर कक्षाध्यापक हस्ताक्षर संस्था प्रधान

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाईट (चूरू)

क्रियात्मक – अनुसन्धान

सत्र – 2021 –2022

शोध कर्ता– अंजना चौधरी, रा.बा.उ.प्रा.वि.घण्टेल, चूरू

1 शोध शीर्षक :– " विद्ययालय की प्रार्थना सभा में सदैव विलम्ब से उपस्थित होने वाले विद्यार्थीयों को समय पर उपस्थित होने हेतु प्रेरित करने का प्रयास । "

2 पृष्ठ भूमिः– " समय के महत्व को समझने वाला व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहता है।" विगत काफी दिनों से देखा जा रहा है कि रा.बा.उ.प्रा.वि.घण्टेल के कुछ विद्यार्थी गण प्रार्थना सभा में विलम्ब से उपस्थित होते हैं तथा कई विद्यार्थी प्रार्थना सभा की समाप्ति पर आते है।

विद्यार्थी प्रार्थना–सभा में उपस्थित नहीं होने से उनमें अभिव्यक्ति वाचन, नैतिक मूल्य संस्कार, संस्कृतिक मूल्य आदि का विकास अवरूद्ध होता है। प्रार्थना सत्र में शारीरिक व माानसिक विकास के लिए भी गतिविधियां आयोजित की जाती है। समय पर उपस्थित न होने के कारण उनका इस प्रकार का अपेक्षित विकास अवरूद्ध हो जाता है। अतः विद्यार्थीयों की प्रार्थना सभा में उपथिति अव्यन्त आवश्यक है। इसके लिए ही अन्वेषक द्वारा प्रयास उपेक्षित है।

3 उद्देश्यः–

1 विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा में समय पर अनुपस्थित होने के कारणों की जानकारी प्राप्त करना।

2 विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा में अनुपस्थिति के कारणों के निराकरण हेतु कार्यक्रम निर्धारित करना।

3 विद्यार्थियों की प्रार्थना सभा के कार्यक्रमों के संचालन में रूचि विकसित करने का प्रयास करना।

4 परिकल्पनाः– विद्यार्थियों के विद्यालय की प्रार्थना सभा में उपस्थित होने से उनके नैतिक व चारित्रिक गुणों का विकास हो पायेगा।

5 सीमांकन :– रा.बा.उ.प्रा.वि.घण्टेल तक शोध का सीमांकन किया गया है। विद्यालय में प्रारम्भिक शिक्षा स्तर कक्षा 2 से 5 तक पर अध्ययन किया गया है।

6 न्यादर्शः– प्रस्तुत शोध हेतु रा. बा. उ. प्रा. वि. घण्टेल के 10 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जो प्रार्थना सभा में अनुपस्थित रहते हैं

7 उपकरणः– प्रयोगात्मक विधि

पुरस्कार देना, पी. टी. एम. आयोजन करना, रूचि उत्पन्न करना, अन्य शिक्षक आदि।

8 कार्य अवधिः– इस क्रियात्मक अनुसंधान के लिए 01 नवम्बर से 30 नवम्बर 2021 की अवधि निर्धारित की गई है।

क्रियात्मक कार्य के लिए पूर्व स्थिति का वर्णनः– पूर्व स्थिति के अनुसार विद्यार्थी विलम्ब से प्रार्थना – सभा में आते हैं। उनके अभिभावक भी उन्हें देरी से छोड़ने आते हैं तथा वे उनके भाई – बहिनों का भी ध्यान रखते है। उनके अभिभावक जागरूक नहीं है। इसलिए विलम्ब से आना इनकी आदत बन गई है। विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा के महत्व का अल्पज्ञान होने के कारण भी वे समय पर नहीं पहुंच पाते है।

समस्या के कारणों का विश्लेषणः–

क्र. सं.	समस्या के कारण	साक्ष्य
1	प्रार्थना सभा में छात्रों को नीरसता महसूस होना।	प्रार्थना सभा में रूचि नहीं लेना।
2	प्रार्थना सभा की अहमियत छात्रों द्वारा न जानना।	छात्रों को जानकारी न होना।
3	प्रार्थना सभा का स्थान उचित नहीं होना (जैसे धूप लगना, बारिस में पानी टपकना, ठंडी हवा)।	शिक्षक एवं छात्रों से प्राप्त जानकारी।
4	अभिभावकों द्वारा बालकों को सुबह देरी से जगाना।	छात्रों से प्राप्त जानकारी।
5	अभिभावकों द्वारा बालकों को समय पर नाश्ता ,टिफिन या गणवेश उपलब्ध नहीं कराना।	छात्रों से प्राप्त जानकारी।
6	छात्रों द्वारा देर रात तक टी. वी. देखना या पढाई करना।	छात्रों से प्राप्त जानकारी।
7	छात्र अपने छोटे भाई –बहिनों को लेकर आते है। जो सुबह विलम्ब कर देते है।	छात्रों से प्राप्त जानकारी।

छात्रों से प्राप्त जानकारी तथा तथ्य नियंत्रण के अन्तर्गत हैं। शिक्षक एवं छात्रों से प्राप्त जानकारी नियंत्रण के अन्तर्गत हैं। कारणों के आधार पर क्रियात्मक परिकल्पना का निर्माण किया गया है।

9 क्रियात्मक परिकल्पना का निर्माणः–

1 शिक्षक प्रार्थना सभा में रोचकता, प्रार्थना सभा का स्थान परिवर्तन, एवं दिद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को समझायेंगे ताकि छात्र समय पर विद्यालय में उपस्थित होंगे।

2 शिक्षक प्रार्थना सभा में विलम्ब से आने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देगें ताकि छात्र समय पर विद्यालय में उपस्थित होंगे।

कार्य योजनाः–

क्र. सं.	क्रियाएं	विधि	स्त्रोत	समय
1	प्रार्थना सभा में विलम्ब से आने वालों की सूची तैयार करना।	प्रार्थनासभा प्रभारी,कक्षाध्यापक सेविद्यार्थियों की सूचीतैयार करना।	प्रार्थना सभा के समय अवलोकन	चार दिन
2	प्रार्थना सभा को रूचिकर बनाने के लिए अन्य कार्यक्रमों का पता लगाना।	छात्रों द्वारा भी उनकी रूचि के कार्यक्रमों का पता लगाना।	रूचि जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग।	तीन दिन
3	प्रार्थना सभा के लिए उचित स्थान निर्धारित करना।	प्रधानाध्यापक की अनुमति लेना।	विद्यालय के भौतिक संसाधन	दो दिन
4	शिक्षक द्वारा विलम्ब से आने वाले छात्रों के अभिभावकों की सूची तैयार करना।	विद्यालय की पी.टी.एम.तथा एम.टी.ए.प्रभारी द्वारा अभिभावकों से सम्पर्क करना।	अभिभावकों से सम्पर्क करना।	चार दिन
5	अभिभावकों से मिलकर उन्हें समझाना।	प्रार्थना सभा से उपस्थिती की उपयोगिता बताना।	प्रार्थना सभा प्रभारी की	छः दिन
6	छात्रों को बुलाकर उनसे सम्पर्क करना।	प्रार्थना सभा केक महत्व को समझाना।	अन्य शिक्षक की सहायता लेना	पांच दिन

10 दत संकलन अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर

क्र.सं.	वर्गीकरण	छात्र/छात्रा	योग
1	प्रार्थना सभा में 10 मिनट विलम्ब से पहुचने वाले बच्चे।	02	02
2	प्रार्थना सभा में 20 मिनट विलम्ब से पहुचने वाले बच्चे।	05	05
3	प्रार्थना सभा में 20 मिनट बाद पहुचने वाले बच्चे।	03	03

दत संकलन अनुसंधान के पश्चात की स्थिति के आधार पर

क्र. सं.	वर्गीकरण	छात्र / छात्रा	योग
1	प्रार्थना सभा में समय पर पहुचने वाले बच्चे	09	09
2	प्रार्थना सभा में 10 मिनट विलम्ब से पहुचने वाले बच्चे।	01	01
3	प्रार्थना सभा में 20 मिनट विलम्ब से पहुचने वाले बच्चे।	–	–

11 दत संकलन का विश्लेषणः–

1 प्रार्थना सभा को रूचिकर बनाने के लिए अन्य कार्यक्रमों का पता लगाकर जब उन्हें प्रार्थना सभा में शुरू किया गया तो बच्चे प्रार्थना सभा में रूचि लेने लगे।

2 प्रार्थना सभा के लिए हवादार तथा छायादार स्थान निर्धारण करने के बाद छात्र समय पर पहुचने लगे।

3 जब अभिभावकों को प्रार्थना सभा का महत्व बताया गया तो वे अपने बच्चों को समय पर प्रार्थना सभा में भेजने लगे।

4 प्रार्थना सभा में बच्चों को अलग–2 तरीके से बैठाना शुरू किया जैसे– गोलाकार, त्रिकोणाकार, आयताकार आदि।

12 निष्कर्षः–

1 प्रार्थना सभा का विद्यार्थी जीवन में बहुत महत्व होता है।

2 प्रार्थना सभा के विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा छात्रों में नैतिक व चारित्रिक गुणों का विकास होता है।

3 विद्यार्थियों की प्रार्थना सभा के कार्यक्रमों के संचालन में भी रूचि विकसित हुई है।

4 विद्यार्थी प्रार्थना सभा के कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी लेते है।

5 विद्यार्थी तथा अभिभावकों को प्रार्थना सभा में उपस्थिति के महत्व का पता चल गया है।

जिला शिक्षा एवम् प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

प्रभाग स्तरीय शोध

सत्र 2021 – 2022

आई. एफ. आई. सी प्रभाग

शोध प्रतिवेदनः–

शोध शीर्षकः–

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में महामारी नियन्त्रण के प्रति संज्ञान में महामारी के इतिहास विषयक शिक्षक द्वारा अध्येता में सुरक्षात्मक अन्तर्दृष्टि विकसित करने की स्थितियों का अध्ययन।

निर्देशनः–

आई. एफ. आई. सी. प्रभाग

शोध कर्ताः–

1 विजय कुमार आर्य

प्राध्यापक,इतिहास

रा. उ. मा. वि. थिरपाली बड़ी

2 श्रीमती भंवरी तेतरवाल

रा. उ. मा. वि. गौरीसर

प्रस्तावना एवं शोध औचित्यः–

मानव का आकृति के साथ संधर्ष का लम्बा इतिहास रहा है। प्राकृति मानव का पोषण करती है परन्तु उस पर नियन्त्रण भी करती है। समय –2 पर मानव जाति पर अनेक संकट आए लेकिन मानव ने अपनी बुद्धिमता से उन पर विजय प्राप्त की है। विश्व में होने वाले युद्धों में इतनी जान नहीं गई हैं जितनी कि इन महामारियों के कारण गई हैं। प्रत्येक महामारी के अतीत में सूक्ष्म कारक तथा वैज्ञानिक तथ्य होते है। जिनके बारे में आमजन को अवगत होना वांछनीय है। आमजन में स्वास्थ्य जागरूकता तथा महामारी नियन्त्रण के तथ्य पहुंचाए जाएं जो विनाश से बचा

जा सकता है। महामारी फैलाव के समय आम जनता में एक भय का माहौल बन जाता है जिससे अनेक अफवाहों का जन्म होता है जो आमजन को गुमराह करती हैं तथा वैज्ञानिक सोच से भटकाती है। उदाहरण स्वरूप इस क्षेत्र में कुछ वर्ष पूर्व स्त्रियों की चोटी कटने की घटनाएं व्यापक रूप से फैली हुई थी, जो वास्तव में मास हीस्टीरिया की मनोवैज्ञानिक घटनाएं थी। कठुआ के विद्यालय में बालकों का असामान्य व्यवहार तथा दिल्ली में मानव बन्दर की अफवाह भी मुख्य है। विश्व की अनेक मॉस हीस्टीरिया की घटनाओं के वर्णन से सामूहिक भ्रम की अवधारणा को समझना आसान हो जाता है।इस विषय में भी अनेक मिथ्या अवधारणाएं हैं तथा अफवाहों का बाजार गर्म है। कोविड–19 विषयक अंधविश्वास, भय, भ्रम, शंकाओं को महामारियों के नियंत्रण के इतिहास द्वारा दूर किया जा सकता है तथा महामारी नियंत्रण के लम्बे इतिहास से भविष्य के लिए सूझ, समझ, अन्तर्दृष्टि का विकास किया जा सकता है। मानव सभ्यता के आदिकाल से ही माहमारियां मानव जीवन को प्रभावित करती आई हैं समय –2 पर नई –2 महामारियों का उद्‌गम हुआ है, वे प्राण हरती है। अपने पीछे एक सीख छोड़ जाती है। ताकि हम भविष्य के लिए सर्तक हो सकें। पूर्व में महामारियों ने जो तेबाही मचाई है उसका अवलोकन करते हुए उनके नियन्त्रण की जो तकनीक मिली हैं, उनका हस्तान्तरण हमें नई पीढ़ी को करना है। प्रस्तुत शोध में विखव्यापक प्लेग, यलोफीवर, हैजा, फ्लू, एडस, चेचक, डेंगु इत्यादि महामारियों के नियन्त्रण हेतु जो सुरक्षात्मक उपाय अपनाए गए और उनका क्या सकारात्मक परिणाम निकला इसका प्रस्तुतिकरण किया गया है। क्या विद्यार्थियों को महामारियों का इतिहास शिक्षण मौजुदा संकट से उबरने में सहायता कर सकता है तथा क्या विद्यार्थयों के व्यवहार में बीमारियों से निपटने के लिए सकारात्मक परिवर्तन होता है, यह जानने का प्रयास इस शोध कार्य में किया गया है। आंकड़ों द्वारा तथ्यों का पुष्टिकरण किया गया है तर्क की कसौटी पर मौजुदा संकट से निपटने की रणनीति छात्र स्वयं तैयार करते है। विद्यार्थी वैज्ञानिक तथ्यों को तर्क की कसौटी पर परखते हैं तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आत्मसात कर लेते हैं जिससे बीमारियों के उनमें सतर्कता आ जाती है। सामाजिक दूरी, प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाने के उपाए रोगाणुमुक्ति रसायनों का प्रयोग, साफ –सफाई का महत्व, इस शिक्षण में सम्मलित किया गया है तथा व्यवहारिक प्रदर्शन, उदाहरण, महामारी पुनःवृति प्रकरणों के द्वारा महामारी विषयक सच्चाई की तह तक पहुंचने का प्रयास किया गया है। इस शोध से हम जान सकेंगे कि महामारी नियंत्रण संबन्धी जागरूकता किस हद तक विद्यार्थियों में उत्पन्न की जा सकती है जिससे आगामी तथा वर्तमान में स्वास्थ्य सबन्धी खतरों को टाला जा सकें।

2 शोध के उद्‌देश्यः–

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में महामारी नियंत्रण इतिहास शिक्षण द्वारा कोरोना विषयक सुरक्षात्मक अभिवृतियां उत्पन्न करने की स्थितियों का अध्ययन करना तथा समूह में आए व्यवहारगत परिवर्तन को ज्ञात करना। महामारियों विषयक ज्ञान का स्थानान्तरण किस हद तक कोविड –19 सुरक्षात्मक जागरूकताा में हो रहा है, का पता लगाना।

3 शोध की परिकल्पनाः–

महामारी नियंत्रण इतिहास शिक्षण के द्वारा कोरोना तथा अन्य माहमारियों के विषय में अभिवृतियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। तथा सुरक्षात्मक अन्तर्दृष्टि विकसित हो सकेगी।

4 शोध उपकरणः–

स्वनिर्मित व्यवहारगत परिवर्तन मापनी तथा समझ विकस मापनी का प्रयोग किया गया है।

5 शोध अध्ययन का सीमांकनः–

प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर तक सीमित रहेगा तथा चार उपरोक्त स्तर के विद्यालयों का इस हेतु चयन किया गया है।

6 न्यादर्शः–

क्र.सं.	नाम विद्यालय	संस्था प्रधान	चयनित छात्र/छात्राएं
1	रा.उ.मा.वि.लम्बोर बड़ी	श्रीमती सुमित्रा	20
2	रा.उ.मा.वि. रावतसर कूंजला	श्री मोहन	20
3	रा.उ.मा.वि. तेहनदेसर	श्री शीशराम	20
4	रा.उ.मा.वि.ढाणी डी.एस.पुरा	श्री परमिन्दर शर्मा	20

7 अध्ययन विधिः–

चरण प्रथम– न्यादर्श का चयन प्रायिकता विधि से किया गया। मानसिक स्तर मापने हेतु जांच की गई तथा समान मानसिक स्तर के उदासीन तथा प्रायोगिक समूह बनाए गए।

चरण द्वितिय– दोनों समूहों का पूर्व परीक्षण किया गया।

चरण तृतीय– महामारी नियंत्रण के इतिहास के तथ्यों का संकलन किया गया। चेचक, हैजा, प्लेग, स्वाइन फ्लू, एडस् ,पोलियो, चिकनगुनिया, यलोफीवर, सार्स इत्यादि महामारियों के नियंत्रण में जागरूकता के तथ्यों का क्रमिक संकलन करके प्रस्तुतिकरण किया गया। सामुहिक सुरक्षात्मक उपायों का वर्णित किया गया तथा विशेषप्रदर्शन किए गए कि किस प्रकार मानव ने महामारियों पर नियंत्रण प्राप्त किया। उदासीन समूह को मुक्त रखते हुए प्रति सप्ताह एक घण्टे के कुल पांच सत्रों में शिक्षण किया गया।

चरण चतुर्थ– प्रायोगिक तथा उदासीन समूहों में आगत परिवर्तन (समझ विकास, व्यवहार परिवर्तन, प्रेरणा, अभिवृति) को स्वंय विकसित मापनियों से मापा गया। अन्य महामारियों के नियंत्रण तकनीक ज्ञान का स्थानान्तरण कोविड –19 के सापेक्ष किस हद तक हुआ है को जांचा गया।

चरण पंचम– उदासीन तथा प्रायोगिक समूह में पूर्व समझ तथा पश्च परीक्षण आकलन के मध्य अन्तर ज्ञात करते हुए विश्लेषण किया गया तथा महामारी नियंत्रण के इतिहास शिक्षण की प्रभावशीलता को आंकड़ों में ज्ञात किया गया।

चरण प्रष्ठ– विश्लेषित तथ्यों को तार्किक कसौटियों पर जांच कर निष्कर्ष प्राप्त किए गए है।

8 विश्लेषणः–

महामारी नियंत्रण संज्ञान में सुरक्षात्मक अन्तर्दृष्टि विकसित करने हेतु महामारी इतिहास शिक्षण पूर्व परीक्षण किया गया तथा शिक्षणोपरान्त जो परीक्षण दो दलों (उदासीन समूह तथा प्रयोग समूह) के दो भिन्न विमाओं (महामारी विषयक व्यवहारगत परिवर्तन तथा महामारी संज्ञान का कोविड –19 संज्ञान में अंतरण) में परीक्षणों के परिणाम के आधार पर सांख्यिकी प्रयुक्त करते हुए विश्लेषण किया गया है। परिक्षणों के प्राप्तांकों को विश्लेषण सुविधानुसार प्रतिशतांक में परिवर्तित कर लिया गया है तथा टी– परिक्षणों द्वारा आंकड़ों की सार्थकता को भी जांचा गया है।

विश्लेषण तालिकानुसार व्यवहार परिवर्तन मापन में उदासीन समूह के पूर्व तथा पश्च परीक्षण में अन्तर नगण्य है। जबकि प्रायोगिक समूह जिसको महामारी इतिहास शिक्षण द्वारा लाभान्वित किया गया है। धनात्मक 23 प्रतिशत व्यवहार संशोधन दर्शा रहा है जो उल्लेखनीय है तथा इतिहास शिक्षण की उपादेयता को सिद्ध कर रहा है। इसी प्रकार महामारी संज्ञान से कोविड–19 संज्ञान अंतरण मापन में उदासीन समूह के पूर्व तथा पश्च परीक्षण में नगण्य अभिवृद्धियां हैं जबकि प्रायोगिक समूह धनात्मक 31 प्रतिशत अभिवृद्धि दर्शा रहा है जो कि इतिहास शिक्षण की प्रबलता प्रकट कर रहा है।

महामारी नियंत्रण के इतिहास शिक्षण द्वारा प्रयोग समूह में सार्थक व्यवहार परिवर्तन हुए हैं जैसे सामाजिक दूरी बढाने की चेतना सेनेटाइजेशन, अनुभव बांटना, स्वास्थ्य जागरूकता, स्वस्थ जीवन पद्धति, सामूहिक प्रयास बढाना वैज्ञानिक दृष्टिकोण उल्लेखनीय हैं। समूह में प्रतिरोधी क्षमता अभिवृद्धि की जागरूकता उत्पन्न हुई है। एलोपैथी के साथ–2 आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति प्रतिरक्षा तन्त्र को सबल बनाने वाले काढ़ों की महता समूह ने जानी है तथा विविध चिकित्सा पद्धतियों के प्रति विश्वास बढा है। समूह अन्धविश्वास तथा अफवाहों के प्रति सचेत हो गया है। यह घटनाओं के तार्किक विश्लेषण तथा बीमारियों की जड़ तक जाने का प्रयास करता है। अकारण भयमुक्ति के साथ–2 समूह का मनोबल बढा है तथा वे भविष्य में क्रिया–कारण प्रभावानुसार प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए सचेष्ट हो गए है। विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा सुरक्षात्मक अन्तर्दृष्टि का प्रर्याप्त विकास होने के साथ उनमें मिथ्या अवधारणाओं के निराकरण अन्धविश्वासों से मुक्ति दिलवाने के साथ –2 इतिहास ने उनके व्यवहार में संशोधन तथा परिमार्जन किया है, जिससे वे आगामी खतरों के प्रति सचेष्ट रह सकेगें तथा समय रहते संक्रमण रोकने का उचित उपचार कर सकेगें। यह शोध दर्शाता है कि ज्ञान एक दिशा में गमन नहीं करता, एक पक्ष का ज्ञान अन्य पक्षों में बहुआयामी उपलब्धियां प्राप्त करवाता है। क्षान का संक्रमण बीमारियों के संक्रमण की तरह ही होता है जैसा कि महामारी नियंत्रण विषयक समझ तथा सीखें सम्पूर्ण सामुदायिक स्वास्थ्य की ओर ले जाती है।

महामारी जागरूकता का कोविड–19 सुरक्षात्मक अन्तदृष्टि विकास के अंतरण में विभिन्न सुरक्षात्मक कौशलों अभवृद्धियां दर्ज की गई हैं जैसे प्रतिरक्षा तन्त्र बढाने, संक्रमण रोकना, सेनेटाइजेशन, सामाजिक दूरी बढाना, तथा प्रतिरक्षा टीकाकरण व्यवहार कौशल में ज्यादा अंतरण हुआ है अपेक्षाकृत प्रतिरक्षा औषध प्रयोग में न्यून अंतरण हुआ है। महामारी नियंत्रण की संधर्षगाथा को कोविड–19 विषयक चुनौतियों का मुकाबला करने की सूझ, अन्तर्दृष्टि प्रदान करती है तथा इस विषय में व्याप्त भ्रम, भय, मिथ्या धारणाओं अवैज्ञानिक तथ्य, अंधविश्वासों से मुक्ति दिलवाते हुए व्यवहार में धनात्मक संशोधन करती है।

9 शोध निष्कर्षः–

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में महामारी नियन्त्रण के प्रति संज्ञज्ञन में महामारी के इतिहास विषयक शिक्षण द्वारा अध्येता में सुरक्षात्मक अन्तर्दृष्टि विकसित होती है तथा महामारी से निपटने के लिए सकारात्मक व्यवहारिक परिवर्तन होते हैं, अतः धनात्मक परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

10 सुझावः–

विद्यार्थियों को महामारी नियंत्रण इतिहास का वैज्ञानिक तथ्यों की विवेचना करते हुए अवगत करवाया जाए तथा क्या, क्यों, कैसे के आधार पर तार्किक प्रस्तुतिकरण द्वारा जागरूकता उत्पन्न की जाए ताकि वे वर्तमाना की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकें। उन्हें महामारी विषयक अफवाहों के प्रति सचेष्ट किया जाए तथा मॉस हीस्टीरिया के पूर्व उदाहरणों से अवगत करवाया जाए ताकि वे अफवाहों की चपेट में न आयें तथा अन्धविश्वासों से मुक्त रह सकें। इसके साथ ही स्वास्थ्य विषयक लोभी, लुभावना, ब्रेनवास करने वाले विज्ञापनों के झांसों में वे न आयें तथा स्वविवेक से सामुदायिक तथा व्यक्तिगत स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें, इस हेतु जागरूकता शिक्षण का प्रावधान होना उचित होगा।

11 परिशिष्टः–

1 पूर्व परिक्षण जांच

2 व्यवहार परिवर्तन मापनी

3 महामारी संज्ञान से कोविड संज्ञान अंतरण मापनी

4 कार्ययोजना

5 महामारी जागरूकता विषयसामग्री तथा महामारी कालक्रम

पूर्व परीक्षण मालाः–व्यवहारगत परिवर्तन मय महामारी संज्ञान

प्रश्न1–महामारी फैलाव में भीड़ को क्यों रोकते है, आपसी दूरी बढाने से क्या लाभ है?

प्रश्न2– सेनेटाइजेशन का क्या महत्व है?

प्रश्न3– क्या यदि किसी महामारी का टीका हो, वह लगवानाा ठीक है?

प्रश्न4– महामारी फैलाने के पीछे क्या कारक हो सकते है?

प्रश्न5– क्या महामारी दैविक प्रकोप के कारण फैलती है?

प्रश्न6– क्या महामारी विषयक आमधारणा, अफवाह सच्ची होती है?

प्रश्न7– जीवाणु, विषाणु ,कीटाणु में क्या भेद है?

प्रश्न8– क्या हम अपनी प्रतिरोधी क्षमता, रोगाणुओं से लड़ने की ताकत बढा सकते है? कैसे?

प्रश्न9– यदि कोई व्यक्ति संक्रमित हो जाए उसे क्या करना चाहिए?

प्रश्न10– संक्रमण न हो इसके लिए हम क्या उपाय कर सकते है?

प्रश्न11– सामुदायिक स्वास्थ्य की प्राप्ति कैसे हो सकती है?

प्रश्न12– स्वस्थ जीवन के लिए हमें हमारी दिनचर्या तथा आदतों में क्या सुधार करना चाहिए?

प्रश्न13– क्या रोगी के स्वस्थ होने के लिए एक ही चिकित्सा पद्धति को अपनाना प्रर्याप्त है?

प्रश्न14– आयुर्वेदिक काढा पीने का क्या लाभ है?

प्रश्न15– आंवला, सिताफल खाने की अनुशंषा क्यों की जाती है?

प्रश्न16– महामारियों में अत्यधिक जान जाने के क्या कारण थे?

प्रश्न17– भारत में हैजा नियंत्रण कैसे किया?

प्रश्न18– बीमारी के वाहक से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न19– कोविड–19 से बचाव के निए हमें क्या करना चाहिए?

कार्ययोजना पत्रकः–

महामारी विषयक शोध कार्य हेतु कार्य योजना तैयार की गई–

प्रथम चरण– जहां शोध कार्य किया जाना है उन संस्थाओं का चयन करना जो माध्यमिक शिक्षा का भलिभांति प्रतिनिधित्व करती होवें।

द्वितिय चरण– निर्धारित संसथाओं में 10–10 विद्यार्थियों के समूह उदासीन समूह तथा प्रायोगिक समूह के न्यादर्श को निरपेक्ष, प्रायिकता विधियों से चुनना जिसमें आयु लिंग, आर्थिकवर्ग, शैक्षिक लब्धि इत्यादि कारक समान हों।

तृतीय चरण– महामारी के इतिहास शिक्षण की विषय सामग्री तथ्यार करना जिसमें महामारी नियन्त्रण तथा महामारी के कारकों, आमजन व्यवहार जिसने महामारी फैलाव को प्रभावित किया, वैज्ञानिक सिद्धान्तों की प्रगति को सम्मलित किया गया है। उन व्यवहारों पर ध्यान देना जिनमें परिवर्तन करने से महामारीयों से होने वाली क्षति से बचा जा सकता है।

चतुर्थ चरण– विद्यार्थियों की पूर्व जांच करना जिसमें उदासीन तथा प्रायोगिक समूह दोनों सम्मलित है। इससे पूर्व पूर्व– परीक्षण तथा पश्च परीक्षण के समान स्तर के जांच पत्रक बनाये गए।

पंचम चरण– इतिहास शिक्षण सामग्री को अढाई माह के समय में दो सप्ताह के अन्तराल से कुछ पांच सत्रों में प्रति सत्र एक घण्टा के अनुसार समूह परिचर्चा विधि द्वारा विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है इस शिक्षण में प्रयोग प्रदर्शन, क्या–क्यों –कैसे, प्रश्न तथा जिज्ञासाओं के निराकरण पर विशेष बल दिया गया है।

पष्ठ चरण– प्रायोगिक तथा उदासीन समूहों का पश्च परीक्षण किया गया जिसमें व्यवहारगत परिवर्तन मापनी तथा तार्किक चेतना मापनी दोनों का प्रयोग किया गया है।

सप्तम चरण– पूर्व तथा पश्च परीक्षणों के आधार पर शोध निष्कर्ष ज्ञात किये गए है।